

आर्य समाज

321



उत्तराखण्ड सरकार	
321	
ASHA ARCHIVES	

॥ दिक्का ॥ ॐ नमः श्रीवक्त्रसत्त्वाय ॥ ॥ दिक्का विधानमाह ॥ द्वापयुन
॥ १ ॥ प्रका विधिमाह ॥ कल ॥ सग्वन ॥ मग वलिरु वग ॥ पंचगव्य
॥ बाहिनपाय ॥ आदि भूत
य ॥ आदो हूर्या घगुनम
पंचगव्यसाधन ॥ आदि प्र
निसाधन ॥ आदिसमय मधुलथिल ॥ मुनि ॥ प्रिसमाधि ॥ कल
॥ प्रका ॥ वलिविय ॥ वाक्प्रका ॥ विव्यगध दूग वीन ॥ लसयाइ

॥ गृत् ॥
॥ १ ॥

नकार्य ॥ पुनर्मधुलदनकं मग प्रजा ॥ पंचगव्यविय ॥ रावना ॥ नि
शङ्कन ॥ लाहाग्निनकाथकालिर्ननत्तमधुलवायक ॥ प्रजायार्य
॥ नत्तमधुलयाखकने ॥ १ ॥ अर्ध्वमिहनाधत्वं ममा
शामहाविराः मर्वसत्त्वान्मीमा नमागनादध्वमहायानि
प्रतिष्ठापनार्थयुष्माकंप्रजना यच्च दध्मिहिकपनिपूव
नार्थं महामधुलं प्रवर्तुर्नवाहामवाकनिष्यामि ॥ युष्माहिर्यत्क
र्तव्यं नत्कर्तव्यं श्रुतिः ॥ ध्यायखकने ॥ नत्तमधुलदाहत्तप ॥ गा

ॐ नमः श्री गणेशाय ॥ ॥ अथाष्टिपुत्रविधिमाह ॥ कलश
संभन नागप मग वलि रुओ पक्षर गव्य माय ॥ अमाघ पाठनाके
ठवनादिस्थापनायाय ॥ ॥ आदोस्यार्घ्यगुनुमधु
न पक्षर गव्य दाधन सिमुनग ॥ यमधुन धिल रुनि ॥
विसमाधि ॥ कलश आदिपुत्रा ॥ देवपुत्रा ॥ धुनिभिव्य
गधपिना गुनुमधुनदनके ॥ मनपुत्रा ॥ रोगना ॥ लाहानिपत्रानि
नाश्रन ॥ पक्षर गव्य विये ॥ ब्रह्मधर्म हीघ नधुन स्वगलि पतवाय

॥ दि आ ॥

॥ ३ ॥

॥ अमाघपाठमधुलकासपलसाय ॥ अमाघपाठमधुलकास्वान

सायक ॥ ॐ अमाघपाठमधुलसर्वविद्यानूत्सायक ॥ ॐ अमाघपा

ठालाकैवनायवज्रपूष्यं प्रति

कुस्वाहा ॥ मध्यम ॥ ॐ जि

ह्निलोकविजयाय अमाघपा

ठप्रतिहर्गर्जाहवज्रपू

ष्यं प्रति कुस्वाहा ॥ ज्ञातेन ॥

ॐ अमाघपाठालाकैवना

यवज्रपूष्यं प्रति कुस्वाहा ॥ यतेन ॥ ॐ आर्यगानायवज्रपूष्यं प्रति

॥ गुरु ॥

कुस्वाहा ॥ स्वयं ॥ ॐ आर्यरुद्रोवज्रपूष्यं प्रति कुस्वाहा ॥ ज

॥ ३ ॥

अन॥ ॐ आर्य्य अमाघा कौं ॥ यवज्ञ पूष्यं प्रगिच्छ स्वाहा॥ ज०
काथं कन॥ ॐ आसूधना जायवज्ञ पूष्यं प्रगिच्छ स्वाहा॥ स्व०
कन॥ ॐ आर्य्य हयगिवायवज्ञ पूष्यं प्रगिच्छ स्वाहा॥
अथ० कन॥ ॐ आर्य्य सर्वनि बर्हविस्कर्णायवज्ञ पूष्यं
प्रगिच्छ स्वाहा॥ स्व० अथ० कन॥ ॐ आर्य्य रुद्रायवज्ञ पूष्यं
यवज्ञ पूष्यं प्रगिच्छ स्वाहा॥ ज० काथं कन॥ पूजास्तुति॥ लाक०
नीमिनी ॥ अर्चनी अमाघगुहसागर्वा अग्निगारुक्कनं मौलिनमामो अ

॥ दिआ ॥

॥ ४ ॥

माघपासर्क ॥ श्रीकानसकृवनाथंकनूधस्त्रिग्वमानसं अमाघपा
र्क्षीनामानंलाकनाथंनमाम्यहं ॥ ब्रह्ममधुलस ॥ स्वानवाय ॥ ॐ ब्रह्म
धुलसर्वविघ्नानुत्कादहं ॥ ॐ शूर्यवनाचनायव
इपूर्यप्रगिकुस्वाहा ॥ म ॥ ॐ शूर्यअकायायव
इपूर्यप्रगिकुस्वाहा ॥ इ ॥ ॐ शूर्यनत्तसीकवाय
वइपूर्यप्रगिकुस्वाहा ॥ खउ ॥ ॐ शूर्यअमिगाणायवइपूर्य
प्रगिकुस्वाहा ॥ थन ॥ ॐ शूर्यअमाघसिद्धियवइपूर्यप्रगिकु

॥ गुन ॥

॥ ४ ॥

स्वाहा॥~~जउ~~॥ ओं मा म की य व ज्ञ पू र्ण प्रणि कृ स्वाहा॥~~वअथुका~~॥

ओं आर्य ना व नी य व ज्ञ पू र्ण प्रणि कृ स्वाहा॥~~खअथुका~~॥ ओं आर्य

पा धु ला य व ज्ञ पू र्ण प्रणि कृ

आर्य ना ना य व ज्ञ पू र्ण प्रणि

~~पक्षपदानपुजा~~॥ सुनि॥ गृ

भिनर्ष प्र द व च व रू र्ण काम का रु वि र्य वि न र्क द ष ना ग प्र च धु

अ र्ध॥ मा हा र्ये स्त नी न का ट न ष र्ये वि रू ना ग दा न र्ध प्र ह्ना म न्य

स्वाहा॥~~जउथुके~~॥ ओं

कृ स्वाहा॥~~जउकथुके~~॥

अ जि ज्ञा न म सि द्वि क ल्य

॥ दिआ ॥

॥ ५ ॥

वलनयस्मनिनीबुजायनस्मेनम॥ ७ ॥ साऽहं नवेनामा नवेदहि
गायय ६० मदि वस्त्रपादाय यावदावाधिम धुनि यधुनाम् ॥ बुद्ध
रुगवर्गमहाका नूधिकं सर्वं ॥ सर्वदक्षिर्गं सर्ववनरु
यान्विर्गमहापूरुषं ॥ अरुध
यं धनं धीं गच्छामि द्विपदाना
धुलसस्त्रानवाय॥ ८ ॥ ॐ धर्ममधुलसर्वविघ्नान्त्कादहं ॥ ॐ आर्य
प्रह्लापानमिगायवज्रपूर्यप्रगिकस्त्राहा ॥ ९ ॥ ॐ आर्यगन्ध

॥ गुरु ॥

॥ ५ ॥

ब्रूहाय वज्रपूर्वप्रगिकस्वाहा॥ ~~क्रीडा~~॥ ॐ आर्यदक्षरुमिका
य वज्रपूर्वप्रगिकस्वाहा॥ ~~खडा~~॥ ॐ आर्यसमाधिना जाय वज्रपू
र्वप्रगिकस्वाहा॥ ~~धन~~॥ ॐ आ
र्वप्रगिकस्वाहा॥ ~~जडा~~॥ ॐ
य वज्रपूर्वप्रगिकस्वाहा॥ ~~व~~
था गगनगुह्यकाय वज्रपूर्वप्रगिकस्वाहा॥ ~~यडाथथक~~॥ ॐ आ
र्यललिगविस्तनाय वज्रपूर्वप्रगिकस्वाहा॥ ~~जडाथथक~~॥ ॐ आ

॥ दि जा ॥ व्यस्वर्धं प्रहाय वज्रं पूष्यं प्रगिकृत्वा हा ॥ ~~पर्वानवाचनं पूजा ॥ सु~~

॥ ६ ॥ मि ॥ याजात्यादिक इष्टवगममहर्षी च शपनं प्राधिनीयं धारुक्त

पंजनानन्दहनः सत्त्वात्समाक

मूढनगियः सत्कृष्ण इष्टवार्धं

यनहनं धर्माय नस्मै नमः ॥

दक्षिणाख्यं यं नन्दि वेसमूपादाय यावदावाधिमधुनिरवधुना

ग ॥ धर्मं न धर्मं गच्छामि विनागानामयं ॥ ॥ धर्माय नमः ॥

वर्गिः अग्राधं च गगन

वासं वृद्धाष्टकं च युगा

७ ॥ सोऽहं वनामात्रं

॥ गृन् ॥

॥ ६ ॥

स्नानवाय ॥ ~~संयम~~ सुलसर्वविघ्नान्स्फुटदहं ॥ ॐ आर्यो वला कि न्धना
यवज्ञपूर्य्यप्रगिकृत्वाहा ॥ ~~दध~~ ॥ ॐ आर्य मेधयनचनामवा
धिसत्वायवज्ञपूर्य्यप्रगिकृत्वा
जायवज्ञपूर्य्यप्रगिकृत्वाहा ॥
जायवज्ञपूर्य्यप्रगिकृत्वाहा ॥
नामवाधिसत्वायवज्ञपूर्य्यप्र
र्यमंशुद्यावायवज्ञपूर्य्यप्रगिकृत्वाहा ॥ ~~स्वडाका~~ ॥ ॐ सर्वनि

ॐ आर्यो वला कि न्धना
ॐ आर्य मेधयनचनामवा
हा ॥ ~~ज्ञान~~ ॥ ॐ गगधर्ग
स्वडा ॥ ॐ आर्य समनर
धन ॥ ॐ वज्ञपाधयनच
निकृत्वाहा ॥ ~~ज्ञान~~ ॥ ॐ आ
ॐ सर्वनि

॥ दिजा ॥
॥ ७ ॥

वर्धुर्विस्कर्हि न च नाम वा धिसत्त्वाय वज्रपूर्व्यं प्रगिकृत्वा हा ॥ स्व
अकाधूर्क ॥ ओं आर्य्य जिगिगर्श यन च नाम वा धिसत्त्वाय वज्रपूर्व्यं
प्रगिकृत्वा हा ॥ ~~ज अ थ थूर्क ॥~~ ओं आर्य्य रव ग र्श यन च ना
म वा धिसत्त्वाय वज्रपूर्व्यं प्रगिकृ
त्वा हा ॥ ~~ज अ का थूर्क ॥~~ प
चाप चान प्रजा ॥ रुगि ॥ चत्वा
त्वाद विद्व य ॥ ४ चत्वा न ४ रुल स्किगा समन ना ॥ नाम न हा योगी
न ४ ४ ४ य ४ वल पू जं लान् रुग व गा य स्मिग धपा कृ गी ॥ प्रह्ला क्षी

॥ ग्रन् ॥
॥ ७ ॥

लसमाधिगफवपूषसीघायनस्मै नमः॥ ७ ॥ साऽहं भवनामा
चर्वेदभिगात्रयः॥ मे दिवस मूपादाय यावदावाधिमधुनिख
छुनाम्॥ अर्वेवर्लिकवाधिस त्वसैघसनर्धगका मिग
धनामयः॥ स मन्वाहन क्रुमादधदिगलाकधरु
सैनिपनिगावृद्धारुगवन्ता वाधिसत्वाश्च आचोय्या
पाध्याश्च अहमवनामायनकिशिरुकायवाकमनालिः॥ सर्व
वृद्धवाधिसत्त्वान्मागापिगनो गदन्वान् सगम्ये॥ हजन्मनि

॥ दिजा ॥

॥ ८ ॥

एवान्नैषू मया पापैर्कर्मकृत्तं काविर्नैव ग॥ गत्सर्वमकध्वपिष्ठु यि
त्वा कुर्वीयित्वा सर्ववृद्धि वाधित्त्वानामाचार्योऽस्यानिके अयया वलया प्र
दत्तया प्रणिदधनया ज्ञानया स्म
त्तमन्नाहर्नैव दन्नायथा न आ
निपार्ते प्रणि विनगानि हस्तदक्ष
वन्ना सर्वस्वेषूपाधिहर्तृषू अन्नक्षकृत्तपि पीलिकाम्पाय ॥ सि ॥
प्रवैमवाहर्नैव दत्ताम्पादाय यावचनाग्रिगमिनीः यावच्च चंद्रसूर्यादि

धप्रणिच्छादयामि ॥ गु ॥

व्यं अहर्नया वद्धिर्वशाध

निहस्तक्ष्णः लज्जिनादया

॥ यन् ॥

॥ ८ ॥

यान्नः प्राधमिपार्गप्रहाधायप्राधमिपानाग्नप्रतिविनमामि४निह
स्मदधुनिहस्मधरुणा४लङ्किनादयावन्नासर्वसत्त्वेषूप्राधिरुगवृश्र
ना४४कृन्ना४४पिपीलिकामूपा
नालगधनवामाचार्यधमहना
यैश्रुकनामि४॥ गु॥ पुननपा
गआर्याश्रुहनायावङ्गीर्वैश्रुदरुदानैश्रुवत्तचर्यमृखावादीसूना
मेवयमयप्रमादस्मानैश्रुगगीगवादिगैमालागन्धविलपनैवधैक

दाय॥ पुवनचावाहप्रथम
ः शिष्यमनूशिष्यमनूविधि
नसमन्वाहजैरुदनायथा

॥ दिशा ॥

॥ ६ ॥

रूपधधनधीउच्चलयनेमहालयनश्रुकालराजनेप्रहायश्रुकालराज
नागप्रगिविनगा॥ सि ॥ १ ॥ पूर्वमवाहेश्रुमूकनामाष्टमांभवन्नुपादाय
यावच्चन्द्रसूर्यादियान्कनश्रुदरु
सूनामेषयमयप्रमादरुनानु
लपनवर्धुकेरूपधधनधीउच्च
राजनागप्रगिविनमानि॥ अननाहप्रथमनागधनवीमार्याधमहगा
मिआमन्मिष्यमन्विधीयनश्रुमूकनामि॥ ॥ अर्घ ॥ ॐ नमः

॥ ग्रन् ॥

॥ ६ ॥

सिनिश्कनश्पचश्हनश्हाश्हीश्हंश् ॐ कानवृष्ण वधधनश्
धिनिश् धुनश्गनश्वनश्मनश्नस्मिनसगसहसुपनिर्महिग
सनिनक्षत्रश्गपश्रुगवन सामादिन्ययमवचृधकु
व्यनवृष्णद्वजपिदवगाथर्वि गचनधकमलायभूध
प्रगिकृत्वाहा ॥ ॥ वृत्तका ~~साधन~~ ॐ सनश्हनश्
रुगवनधनश्समयमनस्मनहं हं रुद्ररुद्रस्वाहा ॥ ३ ॥ नि
~~कृत्वा स्वाहा~~ ॥ ॐ नमानन्नयाय ॥ ॐ नमा आर्याकला

॥ दिशा ॥

॥ १० ॥

किं न धनाय वाधिसत्त्वाय महासत्त्वाय महाकान्तिकाय ~~मद्यथा~~ ॥ ३० ॥

अमाघभीलमहाभील शुभ्रसत्त्वरुन २ सैरुन २ पद्मविरु विगुरुजंग

धनाय समन्तावला किं न धनाय

ॐ आ ४ हं स्वाहा ॥ २१ ॥

विविध ॥ ॐ अमाघपा ४ ॥ १ ॥

सर्व इष्ट समय मूडा प्ररु

उकधर्म एव स मूह कानो ४ ॥

निपुष्टी वन ४ न आ कुरु

स्वस्ति स्वाहा ॥

॥ वाज प्रजा ॥ मधुलधि ॥ रुगि ॥ आभीर्वाद ॥ ३ ॥

महाद्रयाय ॥ मधुलया खानवा गास गय ॥ विरु प्रजा द अ ४ ॥ किरु

॥ ग्रन् ॥

॥ १० ॥

॥ पंक्तौ च स्तुत ॥ ४॥ गान्धर्व ॥ धर्ममूर्तिपालनयाक ॥ धर्मि शक्ति
वगसमाक ॥ ॥ धर्मि इहातीनातीस्त्वापनायाय ॥ दधुन ॥ न
धुनधुनिनकिनक्ष ॥ धर्मि
कलधुनिनकिनक्ष ॥ धर्मि
पनाकर्मोप्रादिभूतकर्मपा
निहोदिगवलिस्त्वापनायाय ॥ धर्मि
ध्यायाहोतीनातीस्त्वापनायाय ॥ धर्मि

॥ दिआ ॥ ~~धुनः परमेश्वरगव्यः ॥ धनः ॥ कुरु ॥ आदि प्रजाः सिंधुनगयः दवप्रणिपा~~
॥ ११ ॥ ~~दप्रजा ॥ अंजनसाधन ॥ आदिसमय ॥ नानाज्ञाय ॥ मधुनविभ ॥ सुनि ॥~~
~~नदिनमस्कान ॥ विसर्जन ॥ वि~~ ~~समाधि ॥ उपाध्यानं ॥ किर्ने~~
~~आ ॥ किर्नेगाय ॥ मीकल ॥ ४ ॥~~ ~~कालसम्पन्न ॥ मगमकुरुदि~~
~~प्रजा ॥ धीनिदेवप्रजा ॥ धीनिम~~ ~~धुलविधित्थं प्रजा ॥ ४ मसा~~
~~नवलिः ॥ धुनिधुनकाता ॥ पहाअयाता ॥ अमाघमा ॥ लोका ॥ धनया ॥ धक~~
~~धानमधुनचाय ॥ दनका ॥ नकल ॥ कासान ॥ गुनमधुन ॥ न~~

॥ ग्र ॥

॥ ११ ॥

~~कदा न न ह्युत्तरजा ॥ धूलिधूनज ॥ क्षिप्रपिङ्गवामः गुणमधुलदन~~
~~क ॥ धूलिस्वकन ॥~~ गजक्षिप्रमर्कदो वक्रवान् कृगमधुलान् सप्रव्याज

लिन ॥ न हला कस्य दयार्थनापि
गथाग न काय संपन्न प्राक्तयः
सस्य दय वर्य सत्स्य नि नी क्षाव

पनलाकास्य दयाय किन्तु
मधुल प्रवक्ष्य कार्य ४ गथा
यित्वा ~~सवना~~ ॥ स्वमनीनः

मुखन प्रविक्ष्य वज्रा निर्गस्य प्रज्ञापन्न स्थान हृद्वाज किन धा कृष्ट ४ म
प्रज्ञा गथाग न ईवीरुगेन रिषिकान् ॥ श्रीसननूपनध्यात्वा मधुलस्य

॥ १२ ॥

क्विरुवर्जिनी॥संप्राफारुहानमरुलैवक्रमन्त्रप्रशावने॥मन्त्रप्रयोगम
रुलैवयनरुर्गमहावले॥मालसैन्यमहाधाने॥अक्सिहादिरिवले॥

॥लाकानुवृत्तिमागम्यचक्रप्र
मिमौवत्सकनुसर्वरूपाफय
यर्धसर्वस्वगिदिक्षामघ॥अनू

ददममः॥~~गुणिनिःपाथयग॥पुनचध्वयना॥~~चक्रवैवरुसत्स
कंदत्तानाथवदस्वम॥चक्रदवगयास्तत्त्वमाचार्यपनिकर्मच॥समय

वृत्तिनवृत्ती॥गत्मात्मनि
सि॥१०॥गगानन्त्रययम्यम
मादजगत्पु॥११॥वृद्धवा॥धो

॥ दिजा ॥

॥ १३ ॥

सर्वब्रह्मानीसम्बर्णगुणमजमं ॥ आचार्य्यः स्यामहं निर्य्य सर्वमन्वा
र्थकान् धाम्ना ॥ ~~मनावाधिवि~~ ~~स्वात्मादर्वकानयन्~~ ॥ समन्वाहनन्तु मा
ब्रह्मावाधिसत्त्वा अहं मन्त्रक नामा ॥ ६४ ॥ मास्वला मूपादा
यया वदावाधिमधुलनियधु नाग ॥ उत्पादयामिपनर्म
वाधिविरुमन्त्रुनै ॥ यथा ॥ यधुकानाथा ॥ ४४ ॥ सर्वो धोक्त
गनिध्वयध ॥ ७ ॥ त्रिविधाशीलभीष्या ॥ ४४ ॥ सर्वधर्मसंयह ॥ सत्त्वा
र्थ ॥ ४४ ॥ क्रियाशीलप्रगिरुद्राम्पहं ॥ ४४ ॥ ब्रह्मधर्म ॥ ४४ ॥ सर्वचक्रिन्

॥ गन् ॥

॥ १३ ॥

यमनूरुनः अशाल्यधगृहिष्यामिसम्बनेवृद्धयागर्ज ॥ वक्रघट्टचम
डाशप्रगिगृह्णामिगत्तग ॥ आचार्यशरगृहिष्यामिमहावक्रकुली
चय ॥ चतुर्दानमृदास्यामिवह्
लेयाल्पसमयकुमनानम ॥ स
ईप्रियानकः महापद्मकुलेशु
नेसर्वसंयुक्तैप्रगिगृह्णामिसर्वग ॥ वृजाकर्मयथासत्कामहाकर्म
कुलाच्चय ॥ उत्पादयित्वापनमंवाधिविरुमनूरुन ॥ गृहित्वासम

त्वातुदिनदिन ॥ महानतकु
जर्ममृगिगृह्णामिवाश्रय
महावाधिसमूहवा ॥ सम्ब

॥ दिक्का ॥ नैकं सर्वसत्त्वार्थकान् ॥ अग्निर्हस्ता नयिष्यामि अमृता
 ॥ १४ ॥ माचयाम्यहं ॥ अहं हस्ता नयिष्यामि सर्वसत्त्वान् स्थापयामि
 ब्रह्म ॥ गंगा इमं गङ्गा कुलम्
 हं रुद्र ॥ ॥ सावना ॥ गङ्गा
 पति सूर्यो सूर्य चन्द्र स्थापित सूर्य
 शुक्रानि ॥ हं ॥ आ ॥ ओं ॥ अङ्गनाधिचिन्ता यित्वा गान्धर्वान् यन हनन्
 हस्तिनाधिगन्धर्वकवजपूरकान् सव्यमुखिनाः हं आ ॥ ओं ॥ अङ्गनाधिचिन्ता यित्वा गान्धर्वान् यन हनन्

॥ गुरु ॥

॥ १४ ॥

^{मन्त्रद्वारा प्रदत्त}
^{लक्षणानामर्थे}
^{विशेषात् तस्य तन्त्रे}
~~धर्मिणो दद्यात् ॥~~ ॥ अथ पूष्य धूप दीप दद्यात् ॥ ॥ गदमध
 क्कादिदन्तकाष्टनष्टादष्टा गुंलं ॥ ॐ वेङ्कटसहस्रं ॥ ~~ॐ निमन्त्रे दामि~~
 नमवलाकयन्तानि नयन्तानि
~~स्वन्नन ॥~~ ॥ गंगा वीकान्तानि
 चतुर्कण्ठय ॥ ॐ श्री ४ विसृज्य
 धय सर्वविकल्पान्नपनय हं ॥ ~~ॐ निमन्त्रे नमः पापयेत् ॥~~ ॥ गंगा
 भूषमीव गच्छन्तानि नयन्तानि ॥ गदन्तानि व्यस्यन्तानि प्रमानेन क्र

॥ दिजा ॥

॥ १५ ॥

~~सुखं विष्णुभीकृते हं अं न न सर्वकृता च स न ज न शि य न्त्रि कृ म~~
~~॥ अं वृद्ध मे यी न ज श त र्वा स्वाहा ॥ अं न न स व य वा सी न द सां द श म~~
~~॥ स्व स्वा स न तं नि व ४५ ॥ अ न~~
प प्र नाः ग स र्व हि ज य या मि द
इ र्ज मि स्त र्वा स र्व इ ४ र व स्य स र्क
मि न स्य न न नि र्म ला ॥ अ श य य म्मा शि न दु लाः ला ग ल ष्ठा म हा त्म मि
४ ॥ य न यूर्य जि न स र्व ४ स प्र णे नि ह ४ ॥ स न ॥ स र्व प नि गृ हि ना ४ ॥ स्तु

क क ल्प का टि रि र्य कृ म पा
घा म धु ल मी द ४ ॥ उत्स न्ना
वा य र्वा च र्य व न श्मि न्म

॥ १५ ॥

॥ १५ ॥

जायमानामहात्मसि ४॥ न नयूर्यमहायानसूजानाहिरुविष्यथ ॥

अथमार्गवनक्षीमान्महायानमहादयः ४ यूनयूर्यगमिष्यन्तारु

विष्यथनथागन ॥ ~~मिथ्याव~~

मिथ्या ॥ ॥ ॐ धी ४ ॥ वज्र

नीकृषी ॥ ~~मिमलेक्षकृषवा~~

लूकंदयाकिप्याय ॥ गन

~~कृषीमनुकपिवापामस~~

स्वप्नकथयिष्यत्थस्वः रि

~~वाय कृषगमा नोदनेमधुलरुमिषय नैयमनिकात्यनानेइत्यज~~

~~विहाअर्याथीस्वापयग ॥ गनोमधुलगृहगत्वापय्यादिरि ४ सुवि~~

॥ दिक्का ॥ ~~कन्यामधुतविमर्जयदिगिजिष्याधिवाननविधि~~ ॥ ~~मन्दनयुन~~

॥ १६ ॥ ~~४ प्रसूयवलिंदखामधुतगृहानि ४ निजंभ्यसिष्यास्वर्पृष्टागि~~
~~नियामादिमूनिगा ४ स्वप्र~~ ~~कृष्टुलीनक्षत्रानक्र~~

॥ नग ४ आचार्य ४ समाधि
मधुबाधिवाननादिविधिक्क
व्याम् ॥ ॥ मधुनरु

~~प्रदक्षिणासिष्ये ४~~ ॥ ॐ प्रविशतु रगवनमहामाजपुनं सर्वसि
द्धिस्तुखप्रदं पनमस्तुखारुमसिद्ध्यर्थं ४ ह्रैवं हा ४ प्रसिद्ध्यस्तु

॥ गुरु ॥

॥ १६ ॥

ॐ ४ ग ४ प्रदक्षिणा
या ता नु आ कल मा ता नु मेत

त्साहिगः प्रविष्टः प्रहृदः अर्धः यः स्वर्गः अमूर्तिः ॥ पश्चिमाक्षाने
पुष्कित्वा मधुलस्य प्रवृद्धादि क्षानानि ॥ ॐ वज्राद्यादयः समयः प्रवक्ष्य
यहं ॥ ~~ॐ निमः ० नू घा घ स प्र~~ ~~व्यमात्ता ॥~~ ॐ पञ्चमसूखा
अयः सुललिविलासनमिगेने ~~मामिरुगेवर्नः अ १ हं वै ही~~
१ हि हि हि हि हि १ प्रगिच्छकू ~~समा १ १ लिनाथ हा ॥ निमि~~
~~प्रा म धु ले प्र न र्ग ही वा स्व सि न गि व द्वा ॥~~ ~~॥ अर्का १ १ म्मा द चिद्र~~
त्वादनादिनिधनः पञ्च ॥ महावज्रसमयसत्त्वाऽकार्यवज्राद्यतिष्ठम

॥ दिआ ॥ सर्वरुमहासिद्धिमाह ॥ धर्माधिदेवग ॥ सर्ववज्रधनानां सा सिद्धिमा
 ॥ ७७ ॥ पवमाज न ॥ निदयि ॥ ४४ ॥ धर्माधिदेवग ॥ सा सिद्धिमाह ॥ धर्माधिदेवग ॥ सर्ववज्रधनानां सा सिद्धिमा
 ॥ ७७ ॥ पवमाज न ॥ निदयि ॥ ४४ ॥ धर्माधिदेवग ॥ सा सिद्धिमाह ॥ धर्माधिदेवग ॥ सर्ववज्रधनानां सा सिद्धिमा
 ॥ ७७ ॥ पवमाज न ॥ निदयि ॥ ४४ ॥ धर्माधिदेवग ॥ सा सिद्धिमाह ॥ धर्माधिदेवग ॥ सर्ववज्रधनानां सा सिद्धिमा
 ॥ ७७ ॥ पवमाज न ॥ निदयि ॥ ४४ ॥ धर्माधिदेवग ॥ सा सिद्धिमाह ॥ धर्माधिदेवग ॥ सर्ववज्रधनानां सा सिद्धिमा
 ॥ ७७ ॥ पवमाज न ॥ निदयि ॥ ४४ ॥ धर्माधिदेवग ॥ सा सिद्धिमाह ॥ धर्माधिदेवग ॥ सर्ववज्रधनानां सा सिद्धिमा

॥ गुरु ॥
 ॥ ७७ ॥

[illegible]

॥ दिजा ॥ यां गुनर्मधुलं गृहनिर्गम्य शिष्यमाहूय गुनर्मधुलं कानयन ॥

॥ १८ ॥ ग४ ॥ ~~रावना~~ ॥ गग शिष्यं वेनाचन नृप्यनवलं विगं ॥ सार्वकर्मिकलेन

जलाहिरिकै हकधमिनसिव

कपप्रचक्रसूर्यचन्द्रोपनि

कुरुहं नक ॥ आधुजी कानेन

स्मिप्रहास्वनमनीनेहं ॥

आपांनी ॥ त्रिकायाधिष्ठान

॥ यक्षगव्य ॥ वस्तु ॥ ॐ सर्व

गथागगानूरुनवाध्यालं कानपूजा मघसमूहस्त्रुनधसमयहं ॥

॥ गुरु ॥

कगपनिध्यानं ॥ ॐ वज्रनकहं ॥ कगगनीयं ॥ ॥ गगानतनधु

॥ १८ ॥

मुल जं हो के १

लेकानयीत्वा ॥ गङ्ग न व क न ज का ज ग इ र्वा क धु जी न धा र्घ न द या ग
॥ ^{सि लो व स्तु} ~~पू ग मा नू ले च द या ग~~ ॥ ॥ ग म श भि व्य सि न्द्र
न गिल के कृत्वा ॥ ^{उं व ज स्त्री व} ~~हं ॥ कृ गा स्त्री प~~ ॥ ^{उं} ॥ ~~मि म यु धे व द्वा ध प र~~
च श व न्ध न मा न य हं ॥ ॥ ^{उं आ ४ खं वी न हं} ॥ ॥ ^{नि प ० न भि व्य मू क्ख य}
॥ ^{द्रा म य ग} ॥ ॥ गृ ही म्पू य्प मु उं द र्क द जि र्ध सा र्च क मि क ग ल य
जि गे कृ त्क षि व स्तु व ज मू धि प द्म च क न्प स्त सूर्य च द्वा प नी

पनमनहस्पमहृलप्रविष्टायवक्त्रव्यनचक्षुःश्रुतव्यमितिः॥ ॐ ख
 धुमीहं हं॥ ~~ॐ निमोनाकृत्य~~ ॐ आ ४ खं वी न हं॥ ॐ न्य न न य म
 निकात्यननप्रव० ४५ः॥ महास नरु हृरु सुगी व्यसूखाम
 वडासत्वायसिद्धिमा॥ ॐ नि पार० न प्रदति धायनी कृता
~~अनिमहृलस्य पूर्ववद्वि~~ ^{आतागु न ठकारिजा} ^{गनो न को तय २} ^{मोता ३३ ३३ ३३ ३३ ३३} ~~त्वाः पथप्रधामका नयन~~
 ॥ ~~॥ गीगप्रवीसरु॥~~ ^{मध्य} ॥ ॐ सर्वगथागनप्रजापत्यायात्मा
 ननिर्यान्तयामिसर्वगथागनवडासत्वाधिष्मती॥ ॥ पूर्व॥ ॐ

॥ दिजा ॥

॥ २० ॥

सर्वगथागगप्रजापस्त्रानायात्मानेनिर्योक्तयामिसर्वगथागगवे
भाचनाधिगिष्टमा ॥ २ ॥ ~~दक्षिण~~ ॥ ॐ सर्वगथागगप्रजापस्त्राया
त्मानेनिर्योक्तयामिसर्वग
मा ॥ ३ ॥ ~~पश्चिम~~ ॥ ॐ सर्वग
त्मानेनिर्योक्तयामिसर्वग
मा ॥ ४ ॥ ~~उत्तर~~ ॥ ॐ सर्वगथागगप्रजापस्त्रानायात्मानेनिर्योक्त
यामि ॐ सर्वगथागगवज्रकर्मकुरुक्षमा ॥ ५ ॥ ~~पुनर्वर्षान~~

॥ ग्रन् ॥

॥ २० ॥

मातां गुरुं मित्रं चैव प्रियं मम
एतद्गुरुं तस्यैव तस्यैव २

पिं ३१ मे
प्र २

॥ ॐ गुणवचनं पस्मानायात्मानं निर्व्याकृत्यामि सर्वसत्त्वप्रविश
धार्थमात्मानं निर्व्याकृत्यामि ॥ ~~गुणवचनं पस्मानायात्मानं निर्व्याकृत्यामि~~ ॥ गग ४ ॥ अर्च्यं सर्व
गथागग कृत्यप्रविशस्तदहर्क
नश्चाननत्वं त्वं गथागग सिद्धि
सिद्धिं न च त्वयदं महद्वृत्तं
याप्यथगि ॥ ॥ ~~गि न सिर्वं च त्वा घ द्वा वा दयं~~ ॥ अर्च्यं न समयावज्ज
ध्वानं स्तूयानयद्यदित्वनिर्मकस्य चिद्गुणावयित्वा ॥ ॥ हदि

॥ दिशा ॥

॥ २१ ॥

वज्रं धत्वा वज्रसत्त्वश्च न इह हृदयसमवस्तिगः ॥ निरुध्य गजद्वीपा
द्यदिक्रयाच्छर्मनयमिष्याह्वायः ॥ ^{मोक्षमार्गः} विजकेलः पविस्त्रिजत्नमना
मार्गश्च गृहीतं पंचानुरागं
नृणां दक ०० हं ॥ ~~मिसकाज~~ ^{कोल} ^{वा} ^र ^{ले} ^प ^न ^र
यागिक्रमादहं ॥ समयसैन
नादकम् ॥ ~~मिषे ० नका~~ ^{पाने} ^{कान} ^{चित्वा} ॥ ^इ ॥ अथ प्ररुगिगवाहं
वज्रपाथीर्यदहं क्रयादिमं कुरु ॥ गगत्तया करुव्यं न च त्वया हम्

॥ गुरु ॥

॥ २१ ॥

वमन्तव्याभागे विषमापनिहाने कालक्रिया कृत्वा न न कपन न स्वा
दिनिवदन् ॥ ~~ॐ निसमयादकानविधिः~~ ॥ ~~॥ गदन्वावधेयवना~~
॥ गगनं स्तिनचिरावज्ञसत्त्व ~~यागैस्तृष्टमालम्ब्यः~~ ॥ मदि
निष्पन्नाननन नैशाः कानेजा ~~मिगारुनूपे निष्पाद्यः~~ ॥ म
वैगथोगगाचाधिनिष्ठमाव ~~ज्ञसत्त्वामावत्विनिवाच~~
यित्वा गस्वदिलेजा गवज्ञाकचरुः ॥ काष्ठापीनपृथ्वीमधुलेसूर्यनी
लहं कार्त्तिसिनेसिवैरुवधुक्कवर्तुलकलभाकवान्धमधुलेचदधुक्क

॥ २२ ॥

चन्द्रनक्षत्राः कार्त्तिकविश्वः स्वर्गदीपनम् रिद्धिरुकायवाकवशा

ॐ ह४ आ४कानस्थनाङ्गाय

लाक्षीपिर्गनं पविधगनरु

नत्तमस्तु न नक्तु मे का न र्ध

॥ गुरु ॥

॥ २२ ॥

ता ५५। ५

घृष्टावाद्ययगः॥ ~~गीगनमाहं~~ ॥ लं ह ह दि व हं भिनमियं आं ॥ क
॥ ॥ ॐ आ व ष य स्ता न रु य न न न न व षा न य २ हं ह ॥ आ मे ॥ ॥
~~नि प ० न ष न द्या मा व र्त्त य धा~~ न प न मा व ष य ग ॥ ५ ॥ भू
~~वा स न न नू पी गु नू ॥ भि ष्यं स~~ च व न न न न ह दि क ना ॥ ॥
~~ली नं वा म घ ष्टा वा द य ग ॥ ॐ~~ नि ष्ट म हा का धा व ष य हं ॥
धी ह नू का य वि घ्न ह वि श्या ना जा य धि म ह स्वा हा ॥ ॥ नि म द्रु षा सा
~~य र्प ० न स व्य क न ष धू प य ग ॥~~ य धा वि ष्टा इ न नू त्प न नि न दा न स्या

॥ दिग्गा ॥

॥ २३ ॥

पनिवज्रसममनं न इपनिपीगप शस्त्रची कवजं न इपनिय ४ कानं
न स्यापनिर्वनाचनेध्यात्वा गगनिवर्क्ये ग ॥ एवमावेक्ष्य विद्यमानं
क्षिप्य स्पचिरुवज्रवीजनक्षि रिष्वाग्वजवी आत्मा कै सेवा
यमानं जिज्ञाया शनकं आ ४ कानं च द्रष्टुं आत्मा मात्मा क
लेध्यात्वा ४ कहिवज्रा नि कया न ॥ एवमं (१०) सूरु मधुतं
वाचस्य पनमस्य वा कस्य सूर्यवद ग ॥ नदन्तवनिर्दुद वनी द्द इ क्षि
रिना कस्य च द्द दीर्घ इ न का वय ग ॥ ॥ क्षिप्य नृजि वज्री ध्वज

॥ गुर ॥

॥ २३ ॥

॥ कृत्वा सर्वसत्त्वार्थसिद्धिं दत्वा यथा नृणां गच्छेत्तु वृद्धविषयपु
ननागमनाय हूँ ह ४ आ ४ मे ४ मूत्रनिविसर्गयगृयिषापरथः ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥ गगान

यसकी दृष्टावलास ठ्ठ निष्ठा

कृष्णवराभैरव्यथाक्रमे॥६॥

द्विरुवं गानस्य स्थात्वा ४॥ एवं मे गुह्यं ह्ययं वक्त्रदक्षिणं कथयामि गृहीत्वा व

रूपदन्तुममिनेनयेनः॥

॥ ॐ स्वस्ति नमो भगवते ॥

धुलाहिमुखेविष्यचउ

गङ्गा नदी सिन्धु पीन वक्र

निष्प्रद्वि वक्ष्यो लिखानसि

का हा जना
ता हा म
नि ज न मो
र

॥ दिक्का ॥ प० स्वदक्षिणायका न विवात न्या विद्या न विविक्तव्या न ॥ ॥

॥ २४ ॥ ॥ स्वयं न धुली स मन्त्रा पाणिष्य प्रवर्णिम ॥ यथा प्रद्वेन कथा वास्तु

दवगाना कलकमान् ॥ यादृति

वृक्षा इर न ॥ यादृक्कृन्पावरा

॥ ॥ ॥ मिताधन पठ मिष्य प्रवर्णि

गमालायास्तु कानमलिगाया आस्वानलघपृष्यमकमा कृद्वेन

कमपृददद्यात् ॥ गन्धधुलीमनसा प्रवर्ध्वरुगवच्छिनसिपृष्यमा

त्रिर्हवदव्यलग्नयस्मि

वर्ध्वगादृगस्यास्तुमधुल

विधि ॥ ॥ गगपृवद्वर्हि

॥ गन् ॥

॥ २४ ॥

लासुवर्धुपुष्पनिजिपगु॥ ॥ ॐ गिष्ठवडादुतामरुवडाध्वना
 मरुवहदयमधुनिगिष्ठिगसर्वसिद्धिभययकहं ह ह ह ह ह
 आखंवीनहं यगिष्ठककुम्भाक
 नसुवर्धुपुष्पनिजिपगु॥ लिमं दलपुष्प मने म दलपुष्प नकने म दलपुष्प पानकने मिनाथहा॥ ॥ ॐ गिष्ठ
 गिमहामुद्रासिद्धि॥ लोचनमुखवामनसिद्धि॥ उरु
 मागु उरुम॥ सिद्धि॥ मध्यमांगमध्यमासिद्धि॥ ॥ अथोरागत्व
 धनासिद्धि॥ विन्वस्यागिडनचिनागुसमीपेजिष्ठसिद्धि॥ देवनी

॥ ॐ ॥
 ॥ ॐ ॥
 ॥ ॐ ॥

॥ दिशा ॥ कुसुमि यस्मान्काष्ठादिविष्णु दमास्मान्व्य ४ दयादवनायानन्येन
 ॥ २५ ॥ नयदिगतिगदायस्यासन्नैर्ष्यं गत्कुलं गम्यतु वनि ॥ समस्तकृत्य
 विधिसिद्धि ४ पंचनखावहिपा गपून ४ जिप दानप्रयया
 वग ॥ गयचवहिपामश्रुद्रसि द्वि ४ ॥ वाश्ववर्तुलनखास
 वाश्ववजावलीवहिध्वनास्मिति द्वि ४ ॥ मधुर्लचास्मनदक्ष
 यग ॥ मत्तुजापानिरुव्यगोमापाशप्रस्तावाक नसप्रवक्षनीय ४ मान्ध
 पटनेगृह्य ॥ गगस्तुर्ष्यं गृहीत्वा मालायामावह्य गोमाली ॥ उां प्रनि

॥ ग्र ॥

॥ २५ ॥

गृह्णन्ते मिमं सत्त्व महावर्गिणः ० न क्षिप्यन्त्यपि न सिवन्धिया न॥

~~निमग्नानि विवर्तः॥~~ ॥ न दन्तश्च न क्षिप्यन्त्याधिपतिं तलाटन

रु न यद्वयमज्ञानं औदयं वि

रावः॥ वेङ्कसत्त्वः स्वयं गः

यचक्षुः घाटनं तत्पनः ॥ उद्या

टयति सर्वो ज्ञो वक्ष्यते चक्षुः

न नृरुनः॥ ॐ ह्यन चक्षुः ॥ हं श्रु

॥ स्वाहा॥ ~~निमग्नानि विवर्तः॥~~

~~न नृरुनः॥~~ ॥ हं वक्ष्यते पृथक् पृथक् दवमाना नाम कथनं पूर्वकं म

धुलाधिपतिमालय सर्वदक्षयित्वा प्रप्यादिति ॥ ४॥ प्रश्नदत्तः ॥ ६॥

॥ दिजा ॥ दापयन् ॥ गु ॥ ॐ दं गत्स धुत्त प ॥ ॐ दं गत्स धुत्त प ॥ ॐ दं गत्स धुत्त प ॥ ॐ दं गत्स धुत्त प ॥
 ॥ २६ ॥ कलजागाम्दामर्त्तनधित्तिः ॥ संपदासर्वसिद्धिनीसमयाग्राहविष्य
 सिः ॥ वज्रपद्मागुलतिर्गमर्त्तन ॥ ॐ नाधर्नकृत् ॥ ॐ निपथि
 ॥ वज्रमधुलमहामधुल ॥ ॐ विद्याहो ॥ यागमधुलम
 ॥ ॐ महामधुलदधिनाहो ॥ गु ॐ महामधुलमहामधुलदीप्तिना
 ॥ ॐ हा ॥ हा ॥ हा ॥ हा ॥ ॐ निपाथयन् ॥ ॐ निषिष्य ॥ दर्शनात्मकप्रव
 विधिः ॥ ॥ मदनुदकारिष्यकार्थगुनवदजिह्वान्दत्ताः ॥ स्वत्ति

॥ गुन ॥

॥ २६ ॥

पविस्त् कर्पणामनस्त् गुन्मधुलकानयित्वा ॥ १० वाधिवडा

धवृद्धानायथादहामहामह ॥ ममापिगधनाथयखवडाईददा

हिम ॥ ~~४४ निप ० नृपथयन~~

ऊसा लिखिगाष्टदलकमलापे

व्यसपत्नीकवडाधननृपविराव

व्यात ॥ ~~लोहा निवजा ॥~~

वर्हिस्त् अगगान्विद्यादवीचरसप्रशमिव्याहिधकार्थ ॥ १० वृ

॥ ~~कादत ॥~~ गगान

विष्टमदसूर्यउपविस्थसि

॥ ~~आना निद्रिकायाधि~~

॥ नदनस्वहदीमयखेनानागादिग्व

वर्हिस्त् अगगान्विद्यादवीचरसप्रशमिव्याहिधकार्थ ॥ १० वृ

॥ दिजा ॥

॥ ३७ ॥

ज्ञानां महिष्यकं दुःशगयाधायवर्जिधागुधकनायथादरुक्तथा

धामसहि ॥ ~~पुनर्जिगाथाप्राथयन् ॥~~ ~~मेरुथागने ॥~~ प्रश्नासमापने

महानागधदवीरुयः वेनाच

मागधनिर्गन्तुनदवधनीप

मटिनिस्त्रुपगाननननद्वं वडा

ज्ञानसत्त्वारिन्नमहिर्विच्य ॥ पुनर्दुःशमूडादिमूर्किलि ॥ पप्रानि

॥ नृपगगधमापूर्यस्त्रिनेलाचनादिविद्यासहिनेकयधजप

नवानेधाननिवठयवडा

प्रमुखनप्रवसिने ॥ शिष्य

जागसप्रश्नाज्ञास्त्रुपे

॥ गुरु ॥

॥ ३७ ॥

गाकावस्तुवादिग ॥ गीगनृपपूष्यकंकमादिष्ट उरि ४ कनकि
सलपावर्जिगवाधिविचिन्नामृगपूष्यसिगकल्लोम्भसिष्यपञ्चानि
४ सृगमलिषिच्यमानेनूपवजा दिरिदविरि ४ सिष्य सुई
सूटिकसंकाशनिर्मलध्यात्वा ॥ ॥ ~~सिष्यसिष्यसि~~
~~नसंध्यत्वा ४ ॥~~ ॥ यत्नजंलस कलमचहदिस्किगस्पस
धोत्तकस्पवनधर्मकुलादिपस्यनिस्पयदायनहिगस्पमहासूख
स्पगत्तमंलीरुवरुगेपनमारिष्यक ॥ लश्रीधनकाश्चनपनवगा

॥ दिजा ॥

॥ २८ ॥

रंस्त्रिलाकनार्थस्त्रिमलप्रहिद्यः ॥ वृद्धाविवृद्धान्चूजपत्रनक्षत्रम्
मंलैरुवदुष्मणिकननवाद्यः ॥ कनापदिष्टः प्रबलस्त्वमाः ॥ रघोम
स्त्रिलाकननदवप्रष्टः ॥ धर्मा रुमः ॥ धनिकनप्रजाना
मन्मंगलैरुवदुष्मणिकननग वाद्यः ॥ सधर्मयूक्तः ॥ शुभ
मंजैलाद्यः ॥ संधानृदवास्तन ददिधीयायः ॥ श्रीनिवास
प्रवनागधानीमन्मंगलैरुवदुष्मणिकननगवाद्यः ॥ ~~धर्माध्यात्म~~
~~कनैः ॥ दकस्त्रोकैः २ दधाम् ॥~~ ॥ गदन्मिष्यस्यसि ॥ नसिपद्मरा

॥ २८ ॥

॥ २८ ॥

[illegible]

॥ ग ग हं जं हं कानाधि
धानी ग ह्यनसत्त्व कीरु गंद
कन गृही गवा धिचिरामृ
गन गत्स्वराववडा ॥ ३॥ मह
रिषि चामि सर्व गथा गगा
रिष्य कं महावंडी ग्रंथा बुक

॥ दिशा ॥

॥ २५ ॥

कारि विवर्हं सतत्सं महामिनिप ० नलि विवर्ह ॥ आदर्शना ज्ञास्य

स्वरावः ॥ ~~०२ सुदकारि विवर्ह~~ ॥ ॥ ०३ लोकनाश्च मकुटं सर्वस्वार्थसा

धकदहि मकनु ॥ ॥ ०४ काना वज्रस

~~भूतस्वपिगवनी ॥ ॥ ०५ रावना ॥~~

धीज्ञानसत्त्वने की कर्मे नरुस्त्वग

विः च्यमानं रूपवजादिरि रूपनीयमानम जीलगी गिकेरावयय ॥

॥ ०६ कनकवस्त्रादि घटिगे नत्तसे रुववज्जी म कुगे गस्वराववज्जी

॥ ग्रन् ॥

॥ २५ ॥

॥ ०७ ॥

नमस्तत्र परं पश्यन्त आगमं मर्मस्थितिं गमिष्यन्तु लोभविषिर्गम्य
~~विमर्शिनश्च ललागन्तमाना अप्य॥~~ ॥ ॐ वज्रधर्मस्वनी अरिर्विचर
हं॥ नमः॥ ॐ सत्त्ववज्री अरिः विशङ्क॥ इव॥ ॐ नन्न
वज्री अरिर्विशङ्क आशु॥ दशिन
विशङ्क जी॥ पश्चिम॥ ॥ ॐ धर्मवज्री अरिः
ॐ कर्मवज्री अरिर्विशङ्क
या॥ इत्युक्तं॥ ॥ इति मर्मस्थितिर्नमो॥ समाना अप्युक्तं॥ ॐ दन्तस
र्ववृद्धानीं धर्मवज्रकनमस्तुते॥ यस्माकं पूजनार्थाय मकुरपश्यन्तु

॥ दिजा ॥

॥ ३० ॥

लाह्वं ॥ ॐ सर्ववृद्धचूडामर्धिमहामकूटं त्रिगुहा ॥ अरिचक्रा

दि ॥ ॐ आवडमकूटारिषिषरहं सनगस्वमहो ॥ ॐ मिपठि तारिषिष

म ॥ ॐ वडरुप्यहा ॥ ॐ मि पठि ससमगास्वनेन तसरे

वस्वरावी ॥ ॐ मिमकूटारिषक ॥ गदन् ॐ हं ग्रां जी ॥ ॐ

मिमगुहाललाटपट्टवधीयाग ॥ ॐ मिपठारिषकविधि ॥

॥ मगकथात्यर्थिवर्ग ॥ पंचरुनस्वरावार्यदहिमवडवर्गममः ॥

विधायननिर्लिशरुनपाकारुवाम्यहं ॥ ॥ रावना मरिगि जी ॥ पविधना

पत्ता विप

॥ गुरु ॥

॥ ३० ॥

मिगारुनूपेक्षानसत्त्वारिन्नभिष्यवर्जं चामिगारुत्मकं विचित्र्य ॥ अलि
यकं महावज्रापादि ॥ ॥ अशारिषिकस्वमसिबुद्धं वर्जनामारिष
कग ॥ ॥ दन्तसर्वबुद्धत्वं गङ्गा वज्रसिद्धय ॥ ॥ दन्त
पथनसिष्यस्य हस्तधुनिनीति वृद्धादगिषहस्तदयाग
॥ ॥ प्रगवज्रधुनिनीति गारुस्वरावसमृत्ताहमव
यक्षानस्वराव ॥ ॥ निवेष्टारिषक ॥ ॥ नदनगथास्वविनवन
॥ प्रक्षपानमिन्नूपेक्ष ॥ ॥ सकंददस्वम ॥ यनप्राफनसर्ववृथाग्यस्मान

॥ दिजा ॥

॥ ३१ ॥

हृद्मं ॥ ॥ रावना ॥ रवैरवद्राभाघसिद्धि नूपंरुनसत्वारिन्नं यथा च
माघसिद्धिपनिधमाविहवयम् ॥ अरिष्यकाद्यादि ॥ ॐ वजाधिपमित्सा
मलि विप्रमिमिनिष्ठवद्रासमय चहा ॥ ॐ वद्राघध भू ॥ अ
गृहीतासिमयारुगवन्मयिसनि हिगारुवः ॥ ॐ निपठन
वैवैवानरुनदद्यात् ॥ ॥ कृपानूष्टाहाने भूमाघ
सिद्धिस्वरावंधून्यगाकः नारिन् ॥ ॐ निघद्वारिषक ॥ ॥ अ
षधवाधिवद्राहस्यादि ॥ ॥ रावना ॥ ॐ चक्रमैवैवाचननूपंरुन

॥ गृ ॥

॥ ३१ ॥

पञ्चवर्ग्यानां भाग्यं नोदये २.

सत्त्वकैलसं विराज्यः ॥ त्रिभुवनं विजय्य ॥ अलिष
कं महावज्रं द्यादि ॥ ॥ ॐ वज्रसत्त्वा मरिचि विषमिव जना मारिषक
ग ॥ ॥ हं भूभुवना मगथा गग
व्यपान् नृपक्षक ॥ दिनी ॥ ॥ अजात्यस्य ॥ ॥ वेधाच
नस्य ॥ ॥ ॥ ॥

वज्रसत्त्वा मरिचि विषमिव जना मारिषक
ग ॥ ॥ हं भूभुवना मगथा गग
व्यपान् नृपक्षक ॥ दिनी ॥ ॥ अजात्यस्य ॥ ॥ वेधाच
नस्य ॥ ॥ ॥ ॥

गणवक्ष ४

॥ दिज्ञा ॥ वज्रसत्त्वस्य ॥ भूक्षारस्य ॥ वनाचनस्य ॥ नत्तसंरुक्स्य ॥ भूमिगारस्य ॥ भूमाधसिद्ध ॥
॥ ३२ ॥ अनूपमवज्र ॥ हासवज्र ॥ उांकानवज्र ॥ नत्तरेड ॥ योगावज्र ॥ भूमाधवज्र ॥
सूनगवज्र ॥ विलासवज्र ॥ ठाधगवज्र ॥ चिन्नामशिवज्र ॥ भूत्ताकिगवज्र ॥ पनमाधवज्र ॥
विजयवज्र ॥ नगिवज्र ॥ गथा ॥ खवज्र ॥ धर्मवज्र ॥ समयवज्र ॥
भूत्तवज्र ॥ लीलावज्र ॥ मायावज्र ॥ गगलवज्र ॥ पद्मवज्र ॥ पानमिगावज्रा ॥
सत्त्ववज्र ॥ स्वयंरुवज्र ॥ वृद्धवज्र ॥ नगीवज्र ॥ वज्रांकुलवज्र ॥ कर्मवज्र ॥ ॥ ३२ ॥
महासुखवज्र ॥ दंघवज्र ॥ नूपवज्र ॥ मार्गधुवज्र ॥ पद्मांकुलवज्र ॥ भूनीसवज्र ॥ ॥ ३२ ॥

अननकवडा ॥ हनुकवडा ॥ कायवडा ॥ रास्कनवडा ॥ सुगीकुलवडा ॥ स्पर्धवडा ॥ ॥

ज्ञानवडा ॥ चिरुवडा ॥ ॥ मानवडा ॥ कर्णधकलवडा ॥ छुधनवडा ॥

सहजवडा ॥ हुंकानवडा ॥ ॥

॥ अकार्यवडा ॥

वडासुखी ॥ अकार्यसुखी ॥ वेनाचनसुखी ॥ नतसंरुवसुखी ॥ अमिगारुखी ॥ अमायसिजिसुखी

वडावंग ॥ वडननाम्मा ॥ वडाठाकिनी ॥ वडाहाना ॥ वडनाग ॥ ॥ वडागर्ला ॥ ॥

वडाविलासिनी ॥ वडाहम्मा ॥ वडागुनी ॥ वडास्वासा ॥ वडागीगा ॥ ॥ वडमाया ॥

॥ दिग्गा ॥ वज्रमहा ॥ वज्रावली ॥ वज्राला ॥ वज्राला ॥ वज्राहासखा ॥ वज्रवठवा ॥

॥ ३३ ॥ वज्रकाकना ॥ वज्रकला ॥ वज्रलोचना ॥ वज्रमाला ॥ वज्रवमाली ॥ वज्रमाना ॥

॥ वज्रमना ॥ वज्रमामी ॥ माहनमि ॥ वज्रका ॥ ॥ वज्रमकी ॥ वज्रनर्मिनी ॥

वज्रपगाका ॥ वज्रवनमि ॥ ॥ आका ॥ वज्रहामा ॥ समयवज्रा ॥

वज्रमाला ॥ ॥ वज्रपांछुना ॥ वज्रनमि ॥

वज्रादया ॥ ॥ नागनमि ॥

॥ ग्रन् ॥

॥ ३३ ॥

सुविशुद्धधर्मधरुहानैवनाचनस्वराव॥ पेशरुहानविशुद्धासापेशसका
फिकानधाम्॥ अविद्यापदमायेशरुहानानिलरुगकामा॥ ~~वृत्तिनामाति~~

~~यक४॥~~ गु॥ ~~जुग~~ मालादकम
यकाउचन॥ ~~जुलि~~ नरिथके४

नुया४॥ ~~खवन~~ व्याख्यानमनुगनु

॥ ॥ नगरी ~~मिष्य~~ दरुदजिधकगाम्भरि॥ ~~वजा~~ चार्याहियकीरा
मयैदहि कृपानिधि स्वपनार्थ४ समर्थस्मो यनाहं त्वत्प्रसादग४॥

कुरुवज्रयधनामायठरि
सिकु४ ~~मिष्य~~ क्रियाचार्यन
साधनसधिकुगारुवनि॥

॥ दिआ ॥

॥ ३४ ॥

निप०त्वाः॥

॥ रावना ॥

गुर्वध्वष॥

॥ कनवनी वडा हं वडा सत्वन

पं०त्वा॥ शिव्यं सर्वो लोका नरुषि उक्तिं कुरु यधुग पगा कालं कर्म

पूर्वदा न सिहासनस्य विचित्रा

दलकमलापनि वडा स

त्वन प०त्वा लव्य॥ अ० गो० स० म०

॥ न गो हं का न जी वडा व

डा सत्वन पं०त्वा॥ अ० नादिनी

धनसत्वा वडा सत्वा महान

ग० ॥ समी रुद्र सर्वात्मा वडा गर्ग पणि ४ पणि ४ ॥ पनद्य सूखा रुगवान्

॥ ग्रन् ॥

॥ निप० न गत्वन य० हयन् ॥ नि वडा स० मय ४ ॥ ॥ न गो घ०

॥ ३४ ॥

आकाशजं ध्यात्वा ॥ ४४ ॥ यथा सर्ववृक्षानां घट्टाद्यान्नागमस्मृता
॥ त्वयापि हि कदाचिद्योवाधिनयाजिनमना ॥ ~~४५ निप० नमस्तेन~~

~~महयग ॥~~ ॥ चतुनक्षत्रिणिधर्मस्कन्ध ४ गसहस्रदश

नानिदानगथागमादिरित्याजनायस्वनिघट्टसमय

४ ॥ स्वरावशुक्लाहिरवः ४ स्वरावेर्विरुवाकगः ४ ॥ स्वराव

शुक्ल ४ सत्सत्क्रियणपनमारुवः ४ ॥ ~~४५ निप० नघट्टावावयग ॥~~ आ

~~लिंगनाशिनयकावयग ॥~~ ॥ मूडाहिसमयप्राकामनामूर्ति

॥ दिजा ॥ दृढत्वगः ॥ सर्वमूर्तिदृढाय नमः ॥ नमः प्राप्रकिर्लिभा ॥ ह्यानमूडामधि
 ॥ ३५ ॥ शायसर्वकामा परागगः ॥ सर्वाः सिद्धिः साधयति प्रणिपाद्यवज्र
 सत्त्वमूर्तिः ॥ ~~नमि वि समयदा~~ नविधि ॥ चना समयदश
 ॥ ~~न इकी पनमाय मरु~~ ॥ वज्रसत्त्वनसंयः शंयध
 धर्मिषवाय च समयनमहाम् डामधिषाय दृढा जप
 ॥ ~~स्वना~~ ॥ स्वद्वीज विर्गगद वना ~~देनाका~~ स्थेन रिर्विच्यमा ॥ ग्रन् ॥
 नविचिन्त्य ॥ ~~स्वा~~ दकना रिर्विचन ॥ अरिष्य केम हावज्जै वैधः रुक ॥ ३५ ॥

सत्यं ज्ञानं तत्परं

महिम्नं विदुः सति

नमस्कृतं॥ ददामि सर्ववृद्धानां त्रिगुणालयसंरुवं॥ ॐ सर्वं
अगमो लिख्यकसमं विप्रैः॥ ~~लेनामनिलकं~~॥ ॐ सप्रनिष्ठीन
वज्रं स्वाहा॥ ~~ॐ निप० म॥~~ पू ~~पेलां चं रुनि॥~~ ॥ गथा
वीर्यं॥ ॥ पादित्यानुसमा याग्यप्रज्ञावेष्टा उवाच
द्विकी॥ घृक्षवज्रसमायाग दाचार्यसचनेमर्ग॥ म
धुलं पद्ममिर्यकं मनीमधुलमूरुमं॥ कृदागममिनिश्चनं चिरु
कृदसमुकुर्य॥ देवगागत्वं संपग॥ पक्षस्कन्धाः समासनपक्ष

॥ दिङ्गा ॥

॥ ३६ ॥

ब्रह्मा ४ प्रकल्पि ४ ॥ ४४ ॥ यवे वर्ध्या रि धका पनना मा रि धक ४ ॥ ४५ ॥

यथा ॥ मनु स क प न र्ज्ञाने द हि म ति जि दा य क ॥ ४६ ॥ नि प ० न ४

यथा ॥ ॥ ग ग स्व य सा ष ४ ग ज फं जि ज फं वा द द या दि

क म न्ते ॥ ग गा भू सि म या रु ग व न् स्मि म पि न्नी नि हि गारु व

॥ ४७ ॥ नि व द न् नि ष्या न्द द्या न् ॥ ॥ नि ष्या पि न्नी नि ३

सि म या रु ग व न् म यि त् नि हि गारु व ॥ ४८ ॥ नि प ० न नृ हि त्वा ज प न् ॥

॥ नि ष्य त् स ह ग पे ४ ॥ न्या पि सि जि वी जा ध ना य प न मा र्थ म न्नु सि

॥ गृ ॥

॥ ३६ ॥

द्विजं यथुद्रयम् ॥ ~~प्रणिमन्त्रप्रदानविधि~~ ॥ नमः ४ सूत्रं ६ नमः ४ नमः ४
नमः ४ नमः ४ नमः ४ नमः ४ नमः ४ नमः ४ नमः ४ नमः ४ नमः ४ नमः ४
॥ ~~आवा~~ ॥ ॐ वज्रं नयापह्नयपद
॥ ॥ ~~अज्ञानं पटलं वत्सभ~~
यनाज्ञानयथा लोकस्य नमिने
दिव्यचक्रं नमिष्यन्मय ॥ ~~अज्ञानविधि~~ ॥ ॥ नमो दर्पे धमादाय
कान्धमन्त्रिर्नदर्शयन् शिष्यं ॥ प्रणिविम्बसमाधर्मा अक्का शुभ्रांश

॥ दिङ्गा ॥ नावीला ॥ अयं आ अन्तरिलाप्या ॥ हं रु कर्म समुद्रव ॥ दप्यर्ध
 ॥ ३७ ॥ वं वृक्षसत्त्वस्वक ॥ अना विल ॥ हदिगि यगि न वत्त सर्ववृक्षा
 धिपस्वर्य ॥ चर्वशात्वा रु वेधर्मा निःस्वरावाननालयान ॥
 गुनसत्त्वार्थमथुलं जागा अनामि नायिनी ॥ ४४ ॥ दिर्प्य ॥ गिप ० नृदत्वा ॥ ॥ ॐ सर्व
 क ॥ गगाही ॥ कानर्जधन ॥ हीमि मि ॥ ४५ ॥ दिवद ॥ मि ॥ ४६ ॥ दिवद ॥ मि ॥ ४७ ॥ दिवद ॥ मि ॥ ४८ ॥ दिवद ॥ मि ॥ ४९ ॥ दिवद ॥ मि ॥ ५० ॥ दिवद ॥ मि ॥ ५१ ॥ दिवद ॥ मि ॥ ५२ ॥ दिवद ॥ मि ॥ ५३ ॥ दिवद ॥ मि ॥ ५४ ॥ दिवद ॥ मि ॥ ५५ ॥ दिवद ॥ मि ॥ ५६ ॥ दिवद ॥ मि ॥ ५७ ॥ दिवद ॥ मि ॥ ५८ ॥ दिवद ॥ मि ॥ ५९ ॥ दिवद ॥ मि ॥ ६० ॥ दिवद ॥ मि ॥ ६१ ॥ दिवद ॥ मि ॥ ६२ ॥ दिवद ॥ मि ॥ ६३ ॥ दिवद ॥ मि ॥ ६४ ॥ दिवद ॥ मि ॥ ६५ ॥ दिवद ॥ मि ॥ ६६ ॥ दिवद ॥ मि ॥ ६७ ॥ दिवद ॥ मि ॥ ६८ ॥ दिवद ॥ मि ॥ ६९ ॥ दिवद ॥ मि ॥ ७० ॥ दिवद ॥ मि ॥ ७१ ॥ दिवद ॥ मि ॥ ७२ ॥ दिवद ॥ मि ॥ ७३ ॥ दिवद ॥ मि ॥ ७४ ॥ दिवद ॥ मि ॥ ७५ ॥ दिवद ॥ मि ॥ ७६ ॥ दिवद ॥ मि ॥ ७७ ॥ दिवद ॥ मि ॥ ७८ ॥ दिवद ॥ मि ॥ ७९ ॥ दिवद ॥ मि ॥ ८० ॥ दिवद ॥ मि ॥ ८१ ॥ दिवद ॥ मि ॥ ८२ ॥ दिवद ॥ मि ॥ ८३ ॥ दिवद ॥ मि ॥ ८४ ॥ दिवद ॥ मि ॥ ८५ ॥ दिवद ॥ मि ॥ ८६ ॥ दिवद ॥ मि ॥ ८७ ॥ दिवद ॥ मि ॥ ८८ ॥ दिवद ॥ मि ॥ ८९ ॥ दिवद ॥ मि ॥ ९० ॥ दिवद ॥ मि ॥ ९१ ॥ दिवद ॥ मि ॥ ९२ ॥ दिवद ॥ मि ॥ ९३ ॥ दिवद ॥ मि ॥ ९४ ॥ दिवद ॥ मि ॥ ९५ ॥ दिवद ॥ मि ॥ ९६ ॥ दिवद ॥ मि ॥ ९७ ॥ दिवद ॥ मि ॥ ९८ ॥ दिवद ॥ मि ॥ ९९ ॥ दिवद ॥ मि ॥ १०० ॥ दिवद ॥ मि ॥

सरधनु विषय

॥ गन् ॥

॥ ३७ ॥

व्याजक उर्ध्व मध्यापन उक्तैः प्रस्थापन समाख्याना उपाया गुह्य
 वास्तु ४॥ मनस्सु सह ज्ञेय रव्याना विद्वि विकल्पना क्षने ॥ चतुर्मान वि
 जया कुम्भ न धर्म धातु लज्ज प्र
 जप ४॥ ~~मिदं शास्त्रं~~ ॥
 मन ४ का तु पद्य दिशि विजनी
 लीका नयन ॥ गद न भिष्य स च श्वि सान्ध पटन्दत्वा ॥ शिष्या रिः
 नवयो वनादि स मन्त्री स मपिनी गदत्वा ॥ ५ ॥ नां वा प्रह्लाद गुह्या रिष

गिव धवी जाधना यक्षन
 ॥ विपापि न क्षय ॥ ॥

कृन् ॥ शिष्या गुह्य मधु

मिर्ज्ञे जु
 कोया त
 गृह मन्
 ल दं

॥ दिशा ॥ कार्थगुमवनिर्घ्यास्यकृणा अलिगुनू वडासत्त्वमधिमुश्चा ॥ युष्मा
॥ ३८ ॥ स्वादप्रभादनप्राफमइनूरुनक्रियागस्माद्गुत्याहिषकंधाकृ
ननाथभूरुयहो ॥ ~~मिनाथा~~ ~~याध्वयधम~~ ॥ ~~स्व~~
ना ॥ गुनूचक्रं भाहं कानवास्तया प्राकृगस्त्रीनूपठून्यगा
नननैक्षिष्यादिगदवीनूपया वडापद्मसंस्क्रानपूर्वक
समापलिंकुर्वन् ॥ ॥ ओ सर्वगथागगानूनाएगनवडास्वरावा ॥ गुर ॥
त्मकाही ॥ गगस्वहृद्दीगमयूरवानीगलाचनादिसमापन्नवैना ॥ ३८ ॥

चनादिनथागगात्मनी॥ वनाचनधानधप्रवक्ष्यमहानालगधदवी
रुयावधूत्यानिर्गच्छनाविचिन्त्य॥ वज्रमल्लासहजैस्थीनीकस्या
द्रुष्टानामिकान्तीवज्रमर्धेप्र
गग४ इवैस्ववाचिगारिन्नमधि
वर्कु॥ ॥ गदन्निव्यः पृथिव्या
असिर्गुन्मन्त्रवयम्॥ ॥ हरुगवनमहाक्षानवज्रयागेक
नस्यने॥ मूडाप्रक्षधकारुद्यवज्रयागसन्द्रुवै॥ यथायूर्यमहा

॥ दिजा ॥

॥ ३६ ॥

स्मान् ४ समाधिकु नृगद्विग सैसा न पंक सैघा न मरुत हं या श्रु भन ४
मिमि ॥ ~~ॐ निम ० न ॥ गुनृगदं न ॥ वृद्ध पुत्राय था निगै ४ ॥~~ सिका वडा ध
ना दिहि ४ ॥ सिधु अनि न्याय था वत्स ॥ वाधि चिरु न चानृथ
॥ ~~ॐ निम ० न ॥ गुनृगदं न ॥ वृद्ध पुत्राय था निगै ४ ॥~~ अही महा
सुख मिनि वद न पि वं न ॥ प्र ह्य पुत्राय स्वा जन थ
म क न द वि न्द्रु रु दान न नि व ४ य न ॥ ~~ॐ निगु द्या रि थ क विधि ४~~
॥ ~~॥ गी न स ह ज स न नृ ह ॥ ग ना ३ ॥ ध्य ष धा पुः षा सा द प्र ४~~

प्राप्तारवर्गके

॥ गृन् ॥

॥ ३६ ॥

वी अनुरुनसंखदायिनी
 कामनरुनी ॥ ॥ नगायुन
 ॥ सान्धपटमनयन ॥ अन्ध

२५२५॥ ॥ ५५५५॥

॥ दिक्का ॥

॥ ४० ॥

गं नमिञ्ज पण्णासापिकुं कुमादिरि ४ सुगन्धीकगमनस्वनममृजदक्ष
यनिगिषिष्ये ॥ ॥ प्रज्ञावदन् ॥ किंत्वमृत्सहसवत्सविन्मृडादिकरुज
धीमक्कलुक्कनथामासंस्त्रीर्धं रुक्मिणथापने ॥ पञ्चवर्ष
समृद्धाविद्यासंरुक्मिपञ्चग ४ ॥ चूर्वनेरुगपञ्चस्यबुद्धि
वत्सयथासुखमिनि ॥ ॥ ३ ॥ पायावदन् ॥ किंश्चिहंनो
सहं देवीगुक्कनक्कादिरुज्जधी ॥ काय्यारुक्मिसदास्त्रीर्धं चूर्वनेरुग
पञ्चच ॥ ॥ प्रज्ञापूनाह ॥ भूहामदिर्यपञ्चसर्वसुखसमन्विने

॥ गुरु ॥

॥ ४० ॥

॥ यः सवति विधान न न स्या ह मय नः स्थिना ॥ कूप प्रयथा कार्यं
 वृद्धा नाधनादिनी ॥ स्वयं महासूखाना जा अर्जुन व हिसदा स्थि नः ॥
 मा ज्ञ ही ॥ ~~इति वदन्~~ ॥ ॥ ~~रावना~~ ॥ ॥ स्वपि स्वयं
 म्वन मूर्ति प्रह्लाधी वदया गि नी नृपे व्याघ्र की ॥ हंसी
 जनी गक मल कुलिषया ॥ ~~कि~~ ~~जन्म मही भू~~ ॥ ॥ उज्जनि
 गो वद व कुपी ग रूट कानं विराय ॥ वाम वामा गगाना ती अय स्थन
 का ही ॥ कानया ग ऊ न्या जिज्ञाया च भिस्तान पूर्व के संचाल्य ॥ ॥

न विना मन

॥ दिजा ॥

॥ ४९ ॥

ॐ श्री ३ ह ४ स्वाहा ॥ ॥ ॐ सर्वं नथा गगान् नारग वज्र स्वरा वात्मका ह

॥ ~~गुणमयनावरुयम्~~ ॥ गुणपदभासगिगानन्दरुद ४ स्वहृदी जकि

नष्टाकृष्टगथागगाश्विस्थि

गापनिमिगवेनाचनलाचनाद

॥ ॥ यावन्नकुरुगयागि

वत्वाभ्यागिविक्किर्नकिमशानन्दजैसखे ॥ पणिगवाधिविरुहुसर्व

सिद्धिनिधानक ॥ मृक्किगस्कन्धविस्मनकृग ४ सिद्धिननिन्दीगा ॥ ४४

नक्षत्रीनागुनूष्माचप्रवक्षि

कवसीरुगानगिमनरुग

वाधिविक्किविसर्कुने ॥ ग

॥ गुन ॥

॥ ४९ ॥

या भूनागगण ४ सहजानन्दनूपप्रह्लासानुच्य ॥ ~~४४ निप्रह्लासा~~
~~नरिष्यक ४॥ विपाडगकाथ ॥ नग ४ चतुर्थारिष्यक ४॥ ४४ दानिरु~~

नवित्साधनार्थयाथकविधि
कसेवचतुर्थारिष्यकैरुलरुग

॥ नारिष्यकाहियायागीया

नागृहिगप्रह्लासानारिष्य
मरिष्यकैरुलरुग

गीत्वमरिवा ४४ नि ॥ ह

न्यरुमुष्टिनाका ४४ यिवच्चमृगनृक्षका ॥ यइकैधूमनह्लायनवज्रि
४सनिलनुवलाकया ॥ निमिगैह्लायनगण ४४ वाधिसत्त्वस्थीमना ॥ ४४

॥ दिङ्गा ॥ ~~ननाह~~ ॥ अरिषके विधा रिन्नमस्मिर्न प्रकाशिनं ॥ आचार्य गुण
॥ ४२ ॥ प्रह्लाचचरुर्थ गत्सूनस्तथा ॥ ~~पुनउक्तं गुणं~~ ॥ पनमानन्दरुवप्राक्तं नि
र्वाद्य विना गतः ॥ मध्यमान
वर्जितः ॥ अनादिनीधने भाने
नाकनूष्ठा रिर्न वाधिचिरुमि
नवाक्कथानि गित्मचने ॥ अधिस्थानपदंश गत्सर्वरूपा नग्नमयं ॥ नरु
वाय गुण क हृदयं वृजा ॥ ४२ ॥ सहजावस्था अमियनसकासक

॥ गुण ॥

॥ ४२ ॥

ही जयिकी ४१॥ नस्मात्सम्यक् सद्गुरुमाणा ~~धर्म~~ किं च ॥ ॥ अथ
 भस्मरुत्तं जन्मसंरुत्तं जीविने च मे ॥ अथ ब्रह्मकलगा गा वृद्धपुत्रा
 स्मिता ॥ ~~४२ किंचित्पुत्रार्थं लिख्यं क~~ ॥ ॥ गदने गने नस्याः
 प्रह्लाया ४ पाणिं लिख्यमा ॥ ॥ दत्त्वा ॥ गदयै वामकनधा
 धत्वा सहकने निवसिदत्त्वा ॥ ॥ साजि ॥ पूर्य मन्त्र
 समर्पितं यमस्मै मयं निगता गता सा जी कृत्य ॥ नाभ्या पायन वृद्ध
 त्वं ब्रह्म च दैजगत्रयं ॥ नस्माद्विया गमनसामाकार्षित्वं कदाचन ॥

५२ नी
 या ५२
 या ५२
 स या ५२
 निवसि ५२
 ५२ मि
 फल ५२

॥ दिक्का ॥ ~~विपादगकार्ये ॥ ४४ दन्तसर्ववृद्धानीविद्यावर्गमनुरुनी ॥ अग्निकाम~~
 ॥ ४३ ॥ ~~नियामरु ४ सिद्धि मस्य न नीरुमा ॥ ४४ दिवदग् ॥ विद्यावर्गदद्यात् ॥~~
~~४४ मि विद्यावर्गदानाविधि ॥~~ ॥ गदन्मिष्यैवज्ञधनरूप
 विराय्ये ॥ ४४ दन्तसर्ववृद्धत्वं व ज्ञसत्त्वकनस्थिर्ग ॥ त्वयापि
 हिसदाधाय्यैवज्ञपादिदृष्टव गै ॥ ४४ निप० नवज्ञैयारु
 यम् ॥ ४४ ॥ ॐ सर्वे गथागमसिद्धिवज्ञसमयनिष्ठप्रयत्नीधनया ॥ गुर्व ॥
 मि वज्ञसत्त्वर्जां ॥ ४ ॥ हि हि हि हि हं ॥ ४४ निप० नृक्षीयार् ॥ ॥ ४३ ॥

हृत्सा नमसो वीर्यमरुशारुचल ऊर्ध्वं ॥ आदाहि अविनासि
चक्षुन्यगावद्गमूच्यन ॥ ~~गमिवद्गमदानविधिः ॥~~ ~~गमिवद्गम~~
~~गमने ॥ गीतवासादहिनादि~~ यथा विधिं कृत्वा कर्त्तव्यं
मूपहननं ॥ ~~गमिवद्गम~~ शिष्याय इष्टदत्त
कमलैलख्यमूडामस्थाय प्रत्यर्कं पृष्टं पृष्टं च ॥
~~गमिवद्गम~~ यान्नुयायिगं वद्गवानाही नृपी स्वयं समन्वयं नृपी विधिं
न्य ॥ गस्मा गस्मिन्वाद्यवी जमयूखे मानी गीह्य न देवता प्रवक्ष्य ॥

॥ दिआ ॥

॥ ४४ ॥

~~आपा नि गीग हा जार न ध गी मूडा रा वना~~ च की कु छुल

क छि नूच क भ खलारु समय था कर्म ॥ अऊर्या मि नारु न त्त स रूव

॥ व ना च ना भा घ सि छि नू पान्

न सत्त्वं ग थानी गे प्र व ४ आ र्या

मूडा आ र्या दि स्वरु गा वा नू व र्य

~~पे लां घे रु ग आप व सि~~ अथ रु व ध ॥ गी ग ध न २ ॥ ओं श्री व

अ हं हं नू क हं रु रू ता किनी जाल स म्ब नं स्वा हा ॥ जि ग की ॥ रु रू म ॥ ओं ३

॥ म टि नि वि वि न्य न ग रू

दि नू प नि ध ना ४३ का दि

धि मू च्य ॥ ~~आ पा नि~~ ॥ पू

॥ गु रू ॥

॥ ४४ ॥

सर्ववृद्धता किनीयवज्रवर्धनीयवज्रवेनाचनीयहं ३रुदृ ३स्वा
हा ॥ ~~विजर्ग~~ ॥ ~~व्याघ्रचर्म~~ ॥ ॐ धन २ धनय २ मर्द २ वज्रध्वकहं रु
दस्वाहा ॥ ॐ वज्रवेनाचनीय हं २ रुदृ स्वाहा ॥ ~~विजर्ग~~
॥ ~~चक्राभिनसि~~ ॥ गृह्णदरुम नावीनचकी अजात्यात्म
कं श्रीवज्रसत्त्वमूडयं वहिन ध्यात्मसीस्थिर्ग ॥ १ ॥ ॐ
वज्रधर्मसमस्त्वं रुद्र २ भूलातिकहं रुदृ स्वाहा ॥ ॐ श्रीं ४ ह ह हं २
रुदृ ॥ ~~विजर्ग~~ ॥ कृष्णलक्ष्म्यक ह्युया ४ ॥ गृह्णदरुम नावीन

॥ दिजा ॥ कृद्युत्तमिगारात्मकं ॥ श्रीवज्रसत्त्व ॥ २ ॥ ॐ वज्रसूर्यगभाविधमय
॥ ४५ ॥ समयस्त्वेनत्नाधकहंरुदस्वाहा ॥ ॐ सर्ववृद्धताकिनीयम्पादि ॥ जि
जने ॥ कष्टिकायीवायां ॥ गृह्ण दहमनावीनकछिकान
त्तसैरुवात्मकं ॥ श्रीवज्रसत्त्वम इयं ॥ ॐ भगवन्पवनमक्ष
भवग ॥ वृद्धहिजिनजिकहंरु दस्वाहा ॥ ॐ ह८नमजिस्वा
हाहं वाषट् हं हं हं ही ८ रुट् २ ही ॥ जिजने ॥ नृचकद्वयकनया ॥ गृह्ण
दहमनावीननृचकं ॥ भगवत्तात्मकं ॥ श्रीवज्रसत्त्व ॥ १ ॥ ॐ हं हं हं हं

॥ गुन ॥

॥ ४५ ॥

स्वाध्वकं हं रुद्र स्वाहा ॥ ओं वै हां यां जीं माह जीं हं हं रुद्र ॥ ~~ॐ निशि~~
~~जर्क ॥ भस्वलाहा ॥~~ ॥ गृह्णद रुमनावीन भस्वला मा घसि ज्ञात्मकं
॥ श्रीवज्रसत्त्व ॥ ५ ॥ ओं श्रीव जहं हं नुकन्यादि ॥ ~~ॐ नि~~
त्रिजर्क ॥ न पुन वं श्रुत उ मृष्ट माला स्वस्वस्थान ॥ ओं के
नश्च व ॥ हं रुद्र ॥ ~~ॐ निशि~~ जर्क ॥ पात्रवानकन ॥
॥ ओं नमारुगव नवीन म्वीन धनाय न्यादि ॥ ~~ॐ निशि जर्क ॥~~ स्वहा
गुठमनू ॥ गृह्णद रुमनावीन स्वहा गुठमनू पात्रक ॥ श्रीवज्रसत्त्व

अत्र गुरुं जाव्यमप्युपयने ४
मिमेक्षत

॥ दिजा ॥ ॥ ~~हृदि वाग कर्षे पगा कादि के दद्यात् ॥~~ ॥ ~~मना नून नैव~~
॥ ४६ ॥ ~~जपेत् ॥ पूष्य माता मादाय स्वभि न~~ ~~सिव ह्री या न ॥ पं लां यं रुग्~~
~~॥ न नो वलि दद्यात् ॥ न ग ४ पूष्य~~ ~~माता मादाय ॥ भि यस्व~~
~~भि न सि ध्वा जपेत् ॥ पं लां यं~~ ~~रुग् ४ ॥ न ग ४ का य पान~~
~~खादयेत् ॥ गी न च की कु छुल ॥~~ ~~॥ अ व ल न नं गी न ॥~~
~~हं का न री जा न ॥ प द न नृ न्य ॥ ध्रु व या दि ग्व लि प्र ग नै ॥ पं लां यं रुग्~~
~~॥ ज न च ना य नृ ग या नै का न यि त्वा ॥ त्व त्व स्थान नि व हा य न् ॥ पू न प्र न्य~~

पंचमा लि व न्ते ७ अ व स दे

॥ गुत्र ॥
॥ ४६ ॥

पुत्राददेना काय रवा गलहिय श्री हृग कुलि धुनका व
स्यांत ने म तादे रवी सर ज न मु शान्ता न ध

~~कैवल्यदद्यात् ॥ गंगा श्रद्धादिपादपूजनं कानयित्वा लाकां भवनं सु~~
~~निर्माणं ॥ गीगसादक्षराय ॥ गंगामूडापूजनं ॥ दक्षिणा ॥ सुनि ॥~~
~~वलि विसृज्य ॥ वलि मूषहयं न ॥ ॥ गंगे नथा गंग चर्च्य ॥~~
~~हृदि निधाय दक्षिणा रुच्य मूड ॥ ॥ निविन चर्च्य विधि~~
~~वीचन कर्त्तव्यं काम मुखि~~
~~य ॥ ॥ वा हे व्याक नामि~~
त्वावज्ञा सत्त्व रूथ गगन ॥ रुवदूर्जगि दुःख भूय नारु व ॥ नय
॥ ॥ ह भूक वज्ञा नाम गगन ॥ सिद्धा समस्त रुच्य व ॥ स्व ॥

॥ दिआ ॥

॥ ४ ॥

~~ॐ निष० न० व्याक० रू० क० र्वा० ॥~~

॥ पूष्यपातनानूनूपनथागनन

पक्षिव्ये॥ यत्त्वे व व्याक्रिय न षु निष्ठ द्वा नय॥ ~~इति व्याकरण धाविधि~~

॥ मदनप्रियिकापात्र

~~सीवनादिकं दद्यात् ॥~~ ॐ

अधर्मचक्र॥ ॐ ब्रह्म हं रुम॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ

वङ्गरायनं ॥ आकाशं ॥ अरु

॥ वा म ॥ ओ दि व न र्ज पुर

कं॥ ~~आदिक्षणीप०न॥ अंयस्वनजीघदृष्टं॥ अंयस्वनप०न०दत्ताम~~

॥ गुन् ॥

~~वृद्धावा दयम्~~ ॥ आकाशल ऊर्ध्व सर्वभाका क्षीचा प्यल ऊर्ध्व ॥ आ

॥ ५ ॥

काष्ठसमनायागत्सर्वगुणसमगा ~~रूपा~~ ॥ अथ प्ररुद्रिसहजचि
त्वात्पादमात्रेण धर्मोपरवर्तय ॥ आपूर्य्यहि समना च धर्मो
खमनूरुन ॥ ~~मृतिवदग~~ ॥ ~~चाना~~ ॥ ~~वैराग्यान्वा~~
~~दत्वाऽप्यधिकानूरुना~~ यथाक्रमे ॥ ~~मिथ्यवैराग्य~~
~~नूपध्यात्वापक्षगथागगवि~~ कानिदद्यात् ॥ ॥ सर्वस
त्विगतार्थसर्वलाकेषु सर्वत ॥ यथाविनयगां विश्वधर्मचक्रप्रव
र्तय ॥ प्रह्लापायस्वरूपात्मा चिन्नामसि निववाचकः ॥ अखिन्नवि

॥ दिक्का ॥

॥ ४८ ॥

गगासंगसत्त्वार्थकृत्सोपनी ॥ मिथर्मभान्वरथानवज्ञपन्नपत्र
कर्मचक्रभद्वपञ्चपात्र्यचक्रपात्रेननूलावचानसवन्दित्वाव
दन ॥ चर्वकनिष्पामियथास्त पयमिषरु ॥ न्यनरु
नविधि ॥ गदनूधानयन भिनसिक्तुं प्रदक्षिण
कानयन ॥ गीतसूत्रगितनीति न ॥ वेनाचननध्यात्वा
चक्रसूत्रगमस्तनी ॥ वेनाचनस्य शिरवचानि द्वा समस्तमाहि
गापनिष्ठा यक ॥ वेनाचनस्य स्वकचक्र ॥ चक्र ॥ १ ॥ अज्ञाय

चक्रं नृपि के ४

गुप्त त्रितेजसा गत चक्र चक्र विविध

नृगपत्र

॥ गुन ॥

॥ ४८ ॥

ध्यात्वा ॥ अक्रास्यस्य गिरुवचा निध अरु शकाय प्राप्स्यर्थ ॥ अ
 क्रास्यस्य कृत्ति क्षीनी तव ज्ञ ॥ २ ॥ नत्त सीरु वध्यात्वा नत्त विमल
 स्तानी ॥ नत्त सीरु वस्य अस्थे २ व ॥ गिरुवाचा निधस्य इ
 खिनी सखार्थ नत्त सीरु वस्य नत्ती ॥ नत्त ॥ ३ ॥ अमि
 गारु ध्यात्वा ॥ मिह विक्कि ठि गच्छने अमि गारु स्य वि
 रुवचा निधस्य ३ निलावर्ध सीरु जन्मस्थ ॥ ५ ॥ मागीनी प्रहन
 धह गा ॥ अमि गारु स्य न कृप द्री ॥ पद्म ॥ ४ ॥ अमाघ मिद्धि

॥ दिआ ॥

॥ ४६ ॥

ध्यात्वा विष्णुवर्जं वडा पमरुनं अमा घसिद्धि उव विरुवचा निधक
अत्रयार्थ अमा घसिद्धि ॥ विष्णुवर्जं ॥ नमः रुद्रादिके आर्य
स्यामने पानयनं रुद्रनिवदम् ॥ अथ निवदिने सि
व्ये ननु धानिरुविष्य निमह्यु लक्ष्मणमरुथ सिष्यस्य ह
द्रमेवदम् ॥ अथूनाम ह्युलाचा र्यमनु ननु धनारुवान्
॥ बुझानी वाधिसत्त्वानी वासत्त्वानी देवगानांच समग ॥ सत्त्वानामनु
के पार्थ विधिनाम ह्युलत्वया ॥ लिखी गव्यं प्रयत्न न गे यथा श्रद्धसा

गुरुया लि
लेडु सिद्धे
पिअमे
न रुद्रतय
॥ गुनु ॥
॥ ४६ ॥

धक॥ हृष्टा प्रविष्टा पत्रमनहस्या रुमं ठली॥ सर्वपापविनिमृक्षा
रुवानदीवसु स्थिग॥ नरुयश्चवनन॥ शक्तियानादस्मान्महास
खाम॥ निवृत्तं भवदृष्टं रवने अ
रिषिक आयुष्मान् सर्ववृद्ध
महानाज॥ स्वामिनि निश्चिने
नास्ति शिक्षा रुके॥ मस्मात्कामविनागर्त्तं न कार्यं रुवेना पुन॥ स
र्वकामापरुगस्तु न मत्तमाकु गारुय॥ पश्चमासासुर्गं रुजन

॥ दिजा ॥ ज्ञान्यः समयाप्यनः ॥ न हि प्राप्तिवधः कार्यस्ति न त्रै न पनित्यः ॥
 ॥ ५० ॥ आचार्यस्तनसंख्याश्चः सर्वनादनमिद्रमः ॥ नास्ति किञ्चिदकर्तव्यं
 प्रह्लापायनचमसा ॥ मारुषी नास्ती न पापं न तथा गगन
 वायथा ॥ ~~मिद्रममनः~~ ॥ प्रह्लादवर्जस्व समयसोख
 दैरुजध्वं ॥ जगत्तिलघुसूखिद्य वडासत्त्वप्रतिसनः ॥
 नास्ती नारुवनः ॥ अपिचधर्मनः ॥ व्ययथपिध्यरिषिकः ॥ प्रि
 यपूवत्सन्नेः मनारिकल्पानार्यवसर्ववृद्धवाधिसत्त्वेः समन्वा

॥ गुण ॥
 ॥ ५० ॥

ठहं लिखिते पिं स कते लिखि
उत्तया गुरुप्या त्वं कला वा ह
ओगा सिमा नु ल पा

क्रियते ॥ ४४ ॥ व्याख्यसमाधिः ॥ ~~नीतिनिर्देशं नुमते न पदं किञ्चिन्नान~~
~~मनु ॥~~ भिष्यत्स्व वलब्ध लिख्येक आख्यस्मा दष्ट प्रवैक निष्पामिय
अस्मापयनि ॥ ॥ अथ भस्म
चम ॥ अथ वृद्ध कृत्वा जा गा वृद्ध
~~४४ निष्पामि वदं न ॥ ॥ नमो~~
~~दजिष्ठा नु जने ॥ नमो गुन वद या न ॥~~ भागमा क द जिष्ठा ॥ नाना
कान वस्त्रा दिन स्व भनी न विम य न ॥ नाशु ली र मि पु र्य च दा क्षी

यातल
का य ग
र आ स
म स को ने
सी वे द ठ
ठे न पा री
जं जु प
र व न ने

ओगा मे मली कि
य गो न म ग ल

अनठा का लिने मे रा ड ल थि ले स करिने की तने स गने छे ये मो ज्ञा ती पी नु ये आ सि इ
वा ड म रा ड ल थी ले म रा ड ल थि म ज न चे त पु जा यु ग स मे पं अं स ली य म गित माल
बा हि क ल्या गु ल छे ये सम या य क वि स र्जन स हार पं अं स ली ल ल ह य म रा ड ल पाल व ल ह य
स म या च क ~~म रा ड ल थि ले~~ लिख्य ने स्व य गित को य ले वी सा ग रु नि स म रा ड ल थि ले

॥ दिजा ॥

॥ ५१ ॥

दासं न थापये ॥ हस्त्यसाधनधान्यादिकाश्च नेमस्त्रिमवच ॥ दं गुति

समय ॥ आशिर्वादिचिन्मपूजा ॥ निदिजाविधिसमाक्रम ॥

अचलयासथकाभापाग

वः गीग अवनिनिहिगवाम

विष्मकाजदिनसमधुल

इष्टानिपनिपीठिगाधनवलाघानाट्टासापने ॥ उद्गामाभि

वीनाजिदजिष्टकर्नेपाक्षाकसव्यगर्ने ॥ वन्दे श्रीवनचन्दनीय

यवपनसंज्ञापयानावि

जान् ॥ ॥ रत्नाक ॥

गगाहं कानवीजाहुवा ॥

॥ गुन ॥

॥ ५१ ॥

धमहाक्रोठं मृदाहं सदा॥

रिष्यकहामादिस्वारिकैचक्रत्वागधचक्रपूर्वकैमधुलैविठार्ज

यत्॥ दिग्वर्तिदद्यात्॥ पत्नी

~~मार्घ्यदद्यात्॥~~ ॐ श्रीहंस्क

दानपत्रं॥ महामृजसिद्धि

हा॥ ॥ नमः॥

~~रिष्यकविधिमाह॥~~

॥ नगाभिष्यन्मधुलप्रतिक्षाम

~~घंरुग॥ नमः॥ चक्रप्रदी~~

रुद्रानकचनधकमलाय

कामनार्थं अर्घ्यप्रतिकम्पा

॥ ॐ नमः॥ श्रीवज्रवानाक्षे॥ ~~भूधर्मिना~~

॥ आदौ गुन्मधुलैकृत्वा यथाविधिवत्

॥ दि आ ॥

॥ ५२ ॥

वीचकं विधिवत्संप्रत्ययि ससाधिः कल ४३ मा मकि साधने दवना

स्त्रिवासनादिका नयगु ॥

॥ नदनूप्रक्या या क्षिनसि न्द्रमा ना

हयगु ॥ श्रीसमनस्य मन्त्रे प

० नाचार्य्यस्य क्षिनसि पुर्य्य

दव्या मन्त्रे चापि प ० न प्रक्या

या क्षिनसि पुर्य्य दत्वा ॥ रा

वना ॥ या लु या वि ना वङ्ग वा

ना हि नृपां स्वयं सन्धन न

पे विचिन्त्य ॥ गस्मा रुस्मिन्वाक् वीज मयूखे नानि ना स्म न देव

॥ युन ॥

गा प्रदेष्टु ॥ अः वाः नीः ॥ गी ग हा अ रु न द ॥ ग गा नू प्रा रा व ना

॥ ५२ ॥

॥ चक्रिकु छुलक धी नृचक भखलारु ऋयथाक्रमे अ जीर्यामि
मारुनत्तसम्भुव वंभाचनाभाघसिद्धि नृपा मदि निविचिन्त्य नृरु
नसत्वं न थनी गै प्र व ष्य जीर्या दिपनिधनी ष्यकादिमू
डा अ जीर्यादिस्ररावा प्र व त्य धिमूच्यः ॥ ~~भाः पाः नीः~~ ॥
पंला पंलुग ॥ ~~जा प व ति~~ ॥ ॥ ~~अथ रु स्व द~~ ॥ गीत
~~धन २~~ ॥ ॐ श्री वज्र हं हं नृक हं हं रुद्र अकिनी जालसंभवनं स्वाहा
॥ ~~मि गि ज फी~~ ॥ ~~रु ऋ~~ ॥ ॐ ३ सर्व वद्ध अकिनी य वज्र व हं नी य व

॥ दिशा ॥ ज व ना च नी य हं ३ रु द् ३ स्वा हा ॥ ~~नि वि ज फं ॥ व्या यु च र्म ॥~~ ॥

॥ य ३ ॥ ओ ध न २ धा न य २ म ह् २ व ज ध क हं रु द् स्वा हा ॥ ओ व ज व ना च नी

य हं २ रु द् स्वा हा ॥ ~~नि वि ज~~ के ॥ च क्रि ॥ ~~मि न सि ॥ गृ द्~~

द रु म ना वी न च क्रि भू आ र्णा त्म के ॥ श्री व ज स त्व व हि ध्वा

त्म क स स्मि ने ॥ १ ॥ ओ व ज ध र्म स म य स्वी रु त् २ आ

ला तिक हं रु द् स्वा हा ॥ ओं क्रिं ह ह हं रु द् ॥ ~~नि वि ज फं ॥ कृ धु~~

त द्व यै क र्ह्या ४ ॥ गृ द् द रु म ना वी न कृ धु ला मि गा रा वा त्म

॥ गु व ॥

॥ य ३ ॥

कै॥ श्रीवज्रसत्त्व॥ २ ॥ श्रीवज्रसूर्य नमो विधमय समयस्वेनत्त
कहं रुद्र स्वाहा॥ ओं ३ सर्ववृद्धताकिनीय॥ ~~ॐ नि विजयं~~॥

॥ कहि॥ शिवायी॥ गृह्णदरु मनीवीनकधीनत्तसंरु
वात्मकै॥ श्रीवज्रसत्त्व॥ ३ ॥ श्रीं ॐ स्व न प न म ॐ स्व न
वज्रहि जि न जि क हं रुद्र स्वा हा॥ श्रीं ह न म हि स्वा हा हं
हं ही रुद्र २ हं॥ ~~ॐ नि विजयं~~॥ ॥ नृचक छया ४ क न या ४॥

गृह्णदरु मनीवीन नृचकै ॐ स्व नात्मकै॥ श्रीवज्र॥ ४ ॥ श्रीं हं श्रीं

॥ दिजा ॥ ४ प्रह्लाध क हं रुद्र स्वाहा ॥ ॐ वं हां यां जीं मां ऊं जीं हं २ रुद्र २ स्वा
 ॥ ५४ ॥ हा ॥ ~~मृगिगिगपी~~ मखला ॥ ~~मृग~~ ॥ गृह दलु मना वीन मखला
 माघ सिध्मात्मक ॥ श्रीवज्रस त्व ॥ ५ ॥ ॐ श्रीवज्र हं हं
 नृनृक हं रुद्रादि ॥ श्रीम फे ॥ नोपनव प्रसूयं मृधु
 माला ४ ॥ ॥ ॐ कन २ प्रच ६ हं रुद्र ~~मृगिगिगपी~~ धपा
 ५ ॥ ॥ ॐ नमो रुगवर्ग स्वादि ॥ मरुध स्वदा र्ज उमन ॥ ॥
 गृह दलु मना वीन खदा र्ज उमन पात्रक ॥ ॥ श्रीवज्रस त्व ॥

॥ गुरु ॥
 ॥ ५४ ॥

खडा जे उमरु पाउद छि वा गभ क धरु पना का दि के दद्या न ॥ ॥

एक भूखा दि के गी नि काय ग्री वा वसु वे दद्या न ॥ ॥ ~~म गो नु ले म नु~~

~~ज ये न ॥ पु न्य माला दा य व~~

~~सु म ॥~~ ॥ न गो म नु रि ४

ही वा व हि नी ग रू न ॥ ॥

॥ ~~भा दि~~ ॥ ॐ न म ४ श्री प न्न नृ थ भ ना य २ ॥ ॐ न म ४ श्री च

क स म्ब ना य ॥ य स्य व ज्ञा धु ख धुं य ह न वी भ मि रु रू न का भ न

~~सि न मि धा न य न ॥ पं ला य~~

प न्न रु अ न च धरु रु नी ग

~~म गो य म नि का व लि द श~~

॥ दिङ्गा ॥ ॐ श्रीं आम्बदिङ्गुक्क वा उं प्रहृतिनगगर्धंगच्छुल्लक्ष्मीं ॥ मङ्गा गल्ल
 ॥ यय ॥ लन्दवन्दारुवसनिनसागर्वगा छुर्वीवाहस्ताहृक्क य पा न नवरुग
 वन ४ पद्मनृत्यध्वनस्य ॥ भू पिच ॥ यासासंसा न च कुवि
 नचयनिमन ४ स नि योग म मह ना ४ सा धिर्य्य प्रसादा
 द्वि ४ कु नि कु उर्वस्वामिना नि प्र पक्ष ४ ग च प्रयात्मव
 र्धं समुदयनि सूर्य कल्पना जाल मृक्का कुर्यात्तस्या घृ पद्म भिनसि
 विनय सङ्गु र सर्व काली ॥ ॐ नम ४ श्री पद्मनृत्यध्वनाय २ ॥ ॐ नम

॥ गुन ॥
 ॥ यय ॥

४ श्रीचक्रसंस्काराय ॥ श्रीगविष्णुसनां नमः ॥ ६५ ॥ नमः
हं नमामिहं नमो नमो नमो स्वाहा ॥ किं चि कल्पपेनियहाय ह
वयसाय वद्धय ह गत्याग सहस्रां मित्रचिन्तयाप
दप्रपाणा प ॥ ६६ ॥ सत्य थगिप्रवृद्धमिथ्यचिरं
व्यतीतनैरा विर्व्यामद यात्मकं वनगुर्वंदमदा
सर्वदा ॥ ॥ श्रीग ॥ ॥ नमः ॥ गंगाचमनिका विसर्ज ॥ ॥ पा
दार्ध्वगर्जनी ॥ नमः ॥ ॥ नमः ॥ ॥ किं चि कल्पयादि ॥ गी

॥ नमस्तुहं नमामिहं नमः ॥ १ ॥

॥ दिक्षा ॥ नमः महिमधुल ॥ ॥ क ॥ यावन्तः ॥ ॥ गीत ॥ प्रभादिन ॥ ॥
 ॥ यद् ॥ कान्त्यनाक्रम्य ॥ ॥ गंगा क्षिप्यापि गुन्मधुलं कानयन ॥ वलिदा
 नैव ॥ ॥ रावना ॥ क्षिप्यं व
 छि ॥ क्षिप्यं वक्ष्यं चक्रपद्मस
 ॥ नक्त ॥ ॥ ॐ कानक्षुक्ल नमिहि
 ॥ क्षपानि ॥ पंचगव्य ॥ लाक्ष्मि नञा ॥ ॥ गंगानन्दमधुलं कृत्वा
 नृवदया ॥ पूगमाचूलादिकंदशान ॥ ॥ ॐ वक्ष उष्ट्रपहं ॥

॥ गुन ॥
 ॥ यद् ॥

~~मि ना वरु~~ ॥ ~~ॐ चक्रवन्धन मानय हं~~ ॥ ~~चक्रवन्धन~~ ॥ गग
~~श्याय विनयि नयि~~ ॥ ॥ उत्कान्तो मय न ॥ ॐ आख
 ना हं रुद्र ॥ ॐ आ १ खरी
 कायां पृच्छं ग ॥ कस्त्वंग स्र
 वदं ॥ सुवर्णं हं महास्रव
 त्म ॥ ॐ सर्वयागचिरुमृत्या दयामि ॥ ग न १ ॥ मद न १ ॥ लिंदन
 ॥ ॐ सुनन समयस्वीहा १ सिद्धि वडीयथासुखमिति ॥ हृदि वडी

५५ १ ॥ ली १ ॥

॥ दिशा ॥ ~~धृवा~~ ॥ अथर्व वज्र वा नाश्या अधिष्ठि गारु विध्य न च त्वय देव ज
 ॥ ५७ ॥ वा नाश्या ४ म प्र न ह स्य म धु ल प्र वि द्या य व कू र्य न च ~~धृवा~~ ग र्वा ॥
 ॥ ओं ख लु अ ना ह हं ३ रु र ॥ ओं आ ४ ख वी न हं ४
 नि प ० ना क व्य य म नि कार्वा न न प्र वि ॥ ॥ ओं म
 हा सून ग दृ रु स ग व्या स र्वा म व ज्ञ स त्वा य सि द्ध्य मां
 ॥ ४४ नि प ० न प्र द क्षि ष य गं क गा ३ लि च रु द त क म ल म ध्व
 सी स्था य्य ॥ पं च प्र धा मं का न य र् ॥ ओं व ज्ञ ता क पू जा प स्था ना

॥ गुत्र ॥

॥ ५७ ॥

५१ मा ३३ ४१ ला लि या ज जो व के

यात्मानं निर्व्याम्यामि सर्वं तथा गतं वदतां का धिष्ठमां ॥ न
॥ ॐ सर्वं तथा गतं वदतां क प्रज्ञा पस्त्रायात्मानं निर्व्याम्यामि
यामि सर्वं तथा गतं वदतां का धिष्ठमां ॥ सर्वं ॥ ॐ
सर्वं तथा गतं ॥ ॐ सर्वं तथा गतं वदतां क प्रज्ञा पस्त्रायात्मानं निर्व्याम्यामि
व्याम्यामि सर्वं तथा गतं वदतां का धिष्ठमां ॥
दक्षिण ॥ ॥ ॐ सर्वं तथा गतं पद्मतां क प्रज्ञा पस्त्रायात्मानं निर्व्याम्यामि
त्मानं निर्व्याम्यामि सर्वं तथा गतं पद्मतां का धिष्ठमां ॥

॥ दिङ्गा ॥

॥ ५८ ॥

~~विम~~ ॥ ॐ सर्वं गन्तव्यं विष्णुं कपूना पस्वना यात्मानं
निर्यान्तयामि सर्वं गन्तव्यं विष्णुं कपूना पस्वना यात्मानं
गुणं च न पस्वना यात्मानं निर्यान्तयामि सर्वं स
त्त्वपनिशान्तिं वदन्तना कर्णामि ॥ पूर्व ॥ ८ ॥ भू
यत्त्वं वदन्तना हि कूलप्रवि हस्तदन्त वदन्तना मू
त्वादयामि यन्तनन्तं वदन्तना या सिद्धिं न पित्राप्स्यमि कि
मन्तान्मा सिद्धि ॥ न च त्वयं दं न हृदमन्तु ले स्पृशनी वक्तव्यं न

ठ न म्भु म्भु
लिदेवि अ
पुनरस यना
पितृहय ४

॥ गुण ॥

॥ ५८ ॥

न समयाप्यथ नि॥ ~~॥ सिनाधि व क धृत्वा॥~~ अयन्त समयाव
 क मूर्झा नीरूपा न यद्यदित्व मिर्मकस्य चि न क्रया न॥ ~~॥ दानि~~
~~॥ धृत्वा॥~~ वज्रसत्त्वस्वः यं न यद्ददय समवस्ति न॥
 निरिंश न क्रधं जाया यदि क्रयादिर्ममय॥ ~~॥ न~~
~~॥ व नाना नाम कि म विदया~~ मो॥ ६४ दन्ते नानक वा निस
 पाणि क्रमादहन॥ समयं न क्रधा स्ति जिः पिव जान्मृगादकैक
 नू गत्त्वया कर्तुं व्यन चत्त्वया ह मव मी ग व्या मा न विमाप निहाय

मो॥ ६४
 ११ मे

॥ दिग्जा ॥

॥ ५६ ॥

॥ ४ ॥ ~~॥ नमः शिवाय ॥~~ नमः शिवाय ॥ नमः शिवाय ॥ नमः शिवाय ॥
नमः शिवाय ॥ नमः शिवाय ॥ नमः शिवाय ॥ नमः शिवाय ॥
नमः शिवाय ॥ नमः शिवाय ॥ नमः शिवाय ॥ नमः शिवाय ॥
नमः शिवाय ॥ नमः शिवाय ॥ नमः शिवाय ॥ नमः शिवाय ॥
नमः शिवाय ॥ नमः शिवाय ॥ नमः शिवाय ॥ नमः शिवाय ॥
नमः शिवाय ॥ नमः शिवाय ॥ नमः शिवाय ॥ नमः शिवाय ॥
नमः शिवाय ॥ नमः शिवाय ॥ नमः शिवाय ॥ नमः शिवाय ॥
नमः शिवाय ॥ नमः शिवाय ॥ नमः शिवाय ॥ नमः शिवाय ॥

॥ गुत् ॥

॥ ५६ ॥

जलचलत्पगाका दया के धनार नीलानीलमधुलचडनकआ
४कानं विराय स्वहृदी जनमिहिरिहिरुकाय वाग्जानीय यथाक
मैगलराव वृहं ह४ आका नक्षत्राव्यपादद्वयान
धस्मावायुमधुलादीपिगनं पविधगनरुकावृक्षस्त्र
नक्तिनक्षानलमधुलस्त्रन नकमे४कानक्षत्रातिप्रमा
नीभिष्यमे४काननस्मिसमहं ४पादधुविनप्रविष्टे४हंकानादिन
नक्षत्रिहिरुपूर्यमानैसमस्तानीनैध्मायाग॥धुपाऊयप्रन४स

॥ दिङ्गा ॥

॥ ५० ॥

ग्यादि॥ हूं ह४ आ४ मे४ मूर्तिवि

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ - ॥ नमो

मधुलारिमूर्खेभिष्यैच

अथस्मिन्कीदृशमश्रुवनिपृष्ट

॥ गङ्गा ४ सिन पी गनक

कृष्णवरुणसंयथाक्रमं॥४॥मन्त्रिप्रविवक्षारिचानसिद्धिराव्यन

वट्कारिचानसिद्धिराव्यन

मस्य श्लाघा ॥ १ ॥ वं मंगु ॥ २ ॥ द्ययसवङ्गदगिधकनेधगृह्णित्वादीपवङ्ग

॥ गुरु ॥

॥ दिजा ॥

॥ ६१ ॥

ददयात् ॥ नमस्तुते मनसा प्रवर्धिरुगवनिक्षिपसि पूष्यं नो कारयन्

॥ ॐ शं गिरु वज्रहृत्ता मेरुवक्षः क्षमा मेरुवक्षदयमभिनिष्ठ

सर्वसिद्धिप्रयत्नकुरु हह

हह ही ॥ आ ॥ खं वी न हं प्र

निकु कुरु मां गतिनाथ ही ॥

॥ ॐ नमो ॥ ॐ भिसि उच्छिषवा

पूष्यं पतंगि महामुद्रासिद्धि

लाचनमुखवामनसिद्धि

॥ उरुमाता उरुमासिद्धि ॥ मध्यमा मध्यमसिद्धि ॥ अर्धमा

॥ गुन ॥

अर्धमासिद्धि ॥ विन्वस्या गिडनचिनागसमिपजिप्रसिद्धि ॥

॥ ६१ ॥

॥ दवगानानुसकियेस्मानका स्यादिविष्णुदगास्मान्मर्थे दयादिवन
यावत्यननयपुष्यपेगनिमदायस्यासनेपुष्यपेगनिमस्यन
कुलेरुवनि॥ समन्तरुयसि
नपुनः ४ जिपधानयययाव
उसिद्धिः ४ वाञ्छवर्तुलनेखा
नास्ति सिद्धिः ४ मधुलेचास्पदक्षयन॥ मन्त्रजापादिराव्यगामा
पाद्यप्रसावान्ननसप्रवक्षनीयः ४ सान्धपटनगृह्य॥ नगस्त

॥ दिक्का ॥ व्यंग्रहिना ॥ ॥ ओं प्रमिगृकृत्वेमिमं वत्समहावत्तमिप० न०

॥ ६२ ॥ सिष्यस्यमिनसिवन्धियागु ॥ ~~॥ मिमालाहियकविधि४ ॥~~ ॥

गदनरुक्मञ्जुदसिष्यस्याधिप मिललाटनरुनउदय

सक्षालं ओदयेविराव्य ॥ वज्र सत्वस्वयेन्यइयचक्रन

द्यारनगस्यन४ ॥ उद्याटय मिसर्वोकावज्ञचक्रन

रुने ॥ ओं क्लानचक्रहैभ्र४ स्वाहा ॥ ॥ मिप० नन्धपटमपनयेगु

॥ ॥ हवर्जपल्लव्युक्तादवगानामकथनमधुनाधिपमि

॥ गुन ॥

॥ ६२ ॥

मानसं सर्वदर्शयित्वा ॥ प्रप्यादिरि ४ स प्रप्यदक्रिर्धादापयन ॥

॥ ७४४ दन्तमधुलपस्थन ॥ अश्वावेत्यनसौ प्रणि ४ चंचवृद्धकल

आमा मूडामन्त्रेन धिष्टिग ४

॥ संपदासर्वसिद्धिनासया

ग्रुविष्यसि ४ वज्रपद्माय

लनिर्गमन्त्रध्वनाधर्नक

व ॥ ७४४ निपथित्वा ॥ ॥ वज्रम

धुलमहामधुलप्रविष्ट

हं ४ यागमधुलमहामधुलदर्शिताहं ॥ गुह्यमधुलमहामधु

लदिजिन्त १ हं ४ हाहाहा ॥ ७४४ निपा ० यन ॥ ७४४ निमधुलप्रवर्त

दिशा ॥
६३ ॥

^{महामहेश्वर उवाच}
~~विधिः~~ ॥ ॥ गदनूदकारिण्यकार्यगुणवदक्षिणादत्वाऽस्वस्मि
कापनिष्कृष्टिष्या गुणमधुनकानयित्वा गुणमध्वययु ॥ ॥
वाधिवज्रधवुआनीयथादक्ष
नाथयिखवजाश्रीददाहिभा ॥
लिखिगास्तदकमलापनिच
सपत्निकैवजधननूपैविराव्य ॥ ~~भाषा नी~~ ॥ ~~धिकायाधिष्ठान~~ ॥
~~हानिभजा~~ ॥ गदनूदस्वद्वीममयुर्वेनानिगीविग्वर्हिनस्तथागना

॥ गुण ॥
॥ ६३ ॥

जाति कलागया १५३ अति बाल

नियदवीशसंप्रशुसिषरिषकार्थ॥ बुझानामरिषकं रुज
गजाधमयवज्जिधम॥ गुधमकनीयथादरुल्लथाददधुमस्यहि॥
~~मिगमथायास्यार्थ॥~~ नरु
महानालगधउविरुयवनी
वज्जमार्गधनिर्गयगडवद
व्यमदिमि धून्यगानकनरु वज्जजानसप्रज्ञाकोर्यनूपज्ञानसत्वा
रिन्नमरिन्नमरिषिषधपुनरुजमूखादिमूर्तिरि॥ पप्रानि॥

॥ दिजा ॥

॥ ६४ ॥

सूर्यगगनपूर्यस्त्रिगैर्लौचिनादिविद्यासहि ६४ यधजपनाकाव
मृवादिग्रहीगनूर्यकैकुमादिवृष्टिरिः कनिकिसलवर्जिगवाधिरि
रामृगपूर्यक्षीगकललोर्मै शिष्येपशानिः ६४ सगमरिः
विच्यमानेनूपवजादिदेवीरि ६४ शिष्येभुञ्जैरुटिकर्मका
क्षीनिर्मलेध्यात्वा ॥ ॥ शिष्ये ~~समिभिसिकलक्षीध्यात्वा ॥~~

॥ यन्मर्जैलैसकलसत्तद्वदिस्त्रिगस्यसर्वात्मकस्यवलधर्मैकु
लाविपस्यनिस्थेषदाषनहीगस्यमहासूखस्यगन्मैगलीरुवहु

॥ गुत्र ॥

॥ ६४ ॥

न पवनमातिथिक ४॥ लक्ष्मीधनकाचनपवनवनालेखिलीकना
थलिमलप्रदिष्टाविवृद्धाम्बुजपवननयनकनमंगलीरुव
दुर्ग ४॥ नितिकनगवाद्य ॥ ननी पदिष्ट ४ प्रवनस्त्वकय
४ रव्यागलिनीकननदवपु ४ धम्मरुम ४ ४॥ निति
कनप्रज्ञानो गन्मर्गलेखवदु ४ नितिकनगवाद्य ४॥
सद्धर्मपूजा ४ शुभमर्गलाय ४ संधानदवास्तनदजिनीय ४ य
४ श्रीनिवास ४ प्रवनी गधमनी गन्मंगलीरुवदु ४ नितिकनकवा

॥ दिजा ॥

॥ ६५ ॥

यः ॥ ~~मिगमथयामकल~~ ~~दकैरुाकै~~ २ दद्यात् ॥ ॥ गद

नृभिष्यस्मभिनसिपद्रुगं नृभिष्यस्मगदकैदद्यात्

॥ ॥ गगाहं ३ ४ हं कानाधि विगैवज्जगागाक्रास्यस

हदीजनध्वनीगह्ना नसत्वेकी रुगैहद्वासेपृथ्वा ॥ गस

विनमदासव्यकवगृहिगवा विचिरुामृगैवपधस

पञ्चववज्जीगुलितलिगनगस्वराववज्जी ॥ ॥ ॐ महासुखवज

सत्वारिषकेधत्वा मरिषि शमिसर्वगथागगाधिपत्वं हठा रुव

॥ गुन ॥

॥ ६५ ॥

पान्नमो गन्धर्व कर्मण

कर्मण

० अरिष के महावड्ड उधु कनमस्क मे ॥ ददामि सर्ववृक्षानादि
 गुणालय संखर्व ॥ १० आ ४ वडादकारिषिधरस्तनगस्त्वमह ॥ ६४
~~मिम ० नाहिषिधर ॥ ६५ सुद~~ काकि ॥ धक ४ ॥ ॥ गदन
 सिद्धनीजनेललाट भिनसिम मानाय्यपुष्पाणि पुष्पम
 इयोमृदयग ॥ कर्णपराका दिसिं इनवागमदियिवाव
 लादीके ॥ ॥ गग ४ प्रथके पक्षु प्रदहने नैवयादिके स्थापयग ॥
 भिष्यापिगुनमधुलै प्रिसमाधिमामकिदवगाधिवासनेयथवि

० लाटवकातदहम-दल
 वगुवालाहेया मधुदिजाके

जापुत्रोगममत्राव

वृक्षीकृद्यमा
 मिश्रिजुके
 जोहलमि
 माजुलाक
 ३ जि १
 ३ ४ १०

चोपेपुत्रागित इह भुजकुलिधुन न्नाधयुता काहि पुजा
 या मुस्त्रागित मुवाहिहि के प्रा न्नाधयुता उजाता या खक
 ने वष्ये ठाविध पात्रस दोमुव्ये ठावि वंही मसह मोत्रव
 नय चद्रत यत नात्रागित यात्राकेपु

॥ दिक्षा ॥

॥ ६६ ॥

धिकुर्यात् ॥ ~~सावना~~ ॥ ~~धूप~~ ॥ ~~नीनी~~ ॥ ~~स्नान~~ ॥ ~~पूजा~~ ॥ ~~पेला~~ ॥ ~~घे~~ ॥ ~~सु~~ ॥ ~~म~~ ॥

॥ ~~पी~~ ॥ ~~भ~~ ॥ ~~दि~~ ॥ ~~पू~~ ॥ ~~जा~~ ॥ ~~सु~~ ॥ ~~मि~~ ॥ ~~रु~~ ॥ ~~ना~~ ॥ ~~रि~~ ॥ ~~ध~~ ॥ ~~क~~ ॥ ~~च~~ ॥ ~~मा~~ ॥ ~~स~~ ॥ ~~म~~ ॥ ~~य~~ ॥ ॥ ७ ॥ उशा

ना गलचक्रमांश्नितधूमांवि

दिगयात्रिलाकमहिगापीय

नसाविनाविकल्लथास्वानन्द

नध्मविनहिकावानाहिकापागव

गगाकायादिवध्मवृगां४प्रहालाहलनहलांमृगसवांसुआ

इकगारास्वनांदग्धानि

खधानाप्रगा॥वृद्धज्ञान

सन्दीहनांरावागवविच

निर्मानानिदिनममधुत

मृगसवांसुआ

॥ गुत्र ॥

॥ ६६ ॥

कुसुमापमा॥ विद्यावृद्धाकदम्बकंदहमियाचक्रयथारुदनी
सानन्दाललिगार्मगस्त्रुवगवावानाहिकौचमसि॥ ॥७॥ चछा
लिकनलीलया निजपदाइ लालिगविष्णुविष्णु
विमहासर्वविनचयलीन सुवाधदया॥ अम्हाजा
यगगापिनिर्वृतिपदप्रोभा विधनजया नागडागच्य
गदयचसहजानन्दायवन्दामह॥ ॥७॥ उक्तसम्बनाष्टसिद्ध
नाचार्यकृष्णपादेर्मर्मकटिर्कानामाधवाक्कथानिगवासन्दा

॥ रिआ

॥ ६७ ॥

नाकाना नालवनि ॥ हत्वनूपलपिही कानेवा नाही ॥ ६४ ॥ वकी हिं गै ॥

गुनक ॥ धना विधान नोका धर्म प्रकाशिता ॥ संसाधन पान गलुन

वडा सखन दक्षिण ॥ कश्चि

नविना नोका पाने प्राप्ता

मनहि ॥ गु ॥ दोसर्व ॥ प्र प्र

पिना गुन रुव पान ग ॥

॥ ॥ दगुलिसमये ॥ आशि

वैद ॥ चूर्ध्वकृत् नय हटा

बलि विसर्जन ॥ मनीषा मादिकी कुर्यात् ॥

॥ ॥ ॐ नमः ॥ श्री वडा देव

॥ गुन

॥ वैश्वानल लला स्पृश काय ॥ स्नापनायाय ॥ उपाध्या नैव जाय ॥

॥ ६८ ॥

य॥ ~~॥ स्वना॥~~ स्वराव ७ आ सर्वधर्मा ६॥ स्वराव ७ ओ ५॥
६॥ न्यगा ६॥ नवडा स्वराव पन म ६॥ नमय नि ६॥ राव पन न स्वम
राव ७ अमक म्य पाप प्ररुं न ७
॥ ६॥ न्यगा क नू ६॥ लि नै वा धि वक्षि न सि नी नै चि न्क य न
न न भि म यी धि न स व राव चि र्ना त्म के व नै ॥ स्व नू प ६॥
मि न आ ॥ ~~स्व न ना रा द के ॥ पं च ग जः पं च य न न च भू ज न ॥~~
~~६॥ न प नै रा दि ॥ भू ध न ह न ॥ भू ५ आ ल प न ॥ उं च अ व न्ध~~

॥ दिजा ॥

॥ ६८ ॥

नमानय २३॥ ~~पञ्च~~ ~~लिङ्ग~~ ~~न~~ ~~क~~ ॥ ७४ देव नानकं वा पिश्यादि ॥ ~~सि~~
~~इ~~ ~~न~~ ~~स्वा~~ ~~न~~ ~~मा~~ ~~ला~~ ~~ग~~ ~~य~~ ॥ कस्वींशं सूत्रं प्रियं न नापि वक्तव्यं ॥ सुरग
हं महासूत्रं निपाद्य क्षिप्तं स
दि ॥ ~~यथा~~ ~~हि~~ ~~या~~ ~~दि~~ ॥ पात्रं नाम
धर्मेऽस्मात्वा वक्ष्ये तत्त्वमहानं
महापि सर्मस ॥ ~~घ~~ ~~७५~~ ~~वि~~ ~~थ~~ ॥ गृहीता सिमयारुगवन ७४ न्यादि ॥ च
कं ववर्षे नृसत्तकं दत्त्वा नाथ ददस्व मे ॥ चक्रं देवनायास्तत्त्वं आचा

॥ गुप् ॥

॥ ६८ ॥

य्यैश्वर्यपनिष्क्रमः॥ समये सर्वबुद्धानां समवर्तगृह्यमुरुर्म॥ आ
चार्यस्यान्यहं नाथ सर्वसत्ताथका न धाम॥ अहो महासूखमि
नि॥ ~~नृप्यादिपूजा॥ नृप्यन्मा~~ ~~॥ पैलां पैलुग॥ दक्षार्जुन~~
~~विर्यजाप॥~~ ॐ अग्नये चाक्षु
~~॥ यधर्मासहं नय॥ पैलां घे~~ ~~ल अस्तनक्षितसजां जां हं~~
~~वरुसहाल॥~~ ॐ ॐ अग्नये ॐ जां हं रुद्र॥ ~~आउत्तान॥~~ ~~नरापग~~
~~मनु॥~~ ॥ ॐ अग्नये चाक्षु नृप्यादि॥ ~~मीनवाला ॥~~ ~~धनिनिन~~

॥ दिजा ॥

॥ ६६ ॥

~~जाळा उा पदळा उा स्वस्तिवाक् पदय ॥~~

॥ अनेना दुव्य गवदि

~~श्यादि ॥ स्वस्तिवाक्कादियथा निमिरुं याह यं ॥ शिनाहृमिक~~

~~स्वाहा ॥ धनस्यावजि रजका~~

~~धन्यं पृथुं शय ॥ सन~~

~~पागसधमधिपं चांशुभादिग~~

~~स्येयं ॥ पंतां धं सुग ॥ ४४~~

~~जन ॥ ॥ सियरुदा ॥ गगठक~~

~~माविदजा ॥ शिष्याधिवा~~

~~सन ॥ पृथुं सुगि ॥ दजिधा ॥ यथाविधिं कुर्यात् ॥~~

~~॥ स्वमाकोक~~

॥ गुन ॥

~~॥ ॥ मिदिजाविधानमात्र ॥ ॥ ॥~~

~~॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥~~

॥ ६६ ॥

कोपगुरुदेवैर्न दलपुत्राया चक्रा निमीनादि

गुनप्रज्ञा

देव्याद्यः प्रज्ञासं कल्पे	१
गुनमधुलपचगव्यसिद्ध	
नय	२
आदि प्रज्ञा	३
कौजलसाधन	४
आदि अरुथ	५
शिसमाधि	६
कलभादि प्रज्ञा	७
दव प्रज्ञा	८
वनिविद्य	९
वाक्प्रज्ञा	१०
माज्ञाने शिष्यलसय	११
गुनमधुलदेकमगप्रज्ञा	१२
पञ्चगव्यविद्य	१३
शिष्यसावना	१४
नित्ताग्निमन्त्राग्निन आ	१५
धका लिनेन त्रवायक प्रज्ञाया	१६
य	

नत्नमछुलयाखकन — १
 अख्यवना — १६
 नत्नमछुलदीरुलप — १६
 गुनुपादपूजा — २०
 थडी २ थसगय — २१
 हावना — २२
 खंठा नरुहामेवनजापयासी — २३
 सीरुलप — २४
 वडीथिय — २५
 कलधल — खीनाय —
 मछुलथि — भकिगभस
 गाङ्गन — ^{गमवृद्धि} २६
 चिरुपूजा दशसमयभूक — २७
 समयगधचक्रधूमाभि — २८
 गधचक्रसुमाल — २९

॥ ४४ मिगनपूजा ॥

॥ अखुर्मीविगपुद्ग ॥
 पादार्घयासगनमछुल — १

पंचगव्यसिद्धयर्थ — ३
 मंडलधीन — ३
 शिखमाधि — ३
 कलशसगुननागपद्मपूजा — ५
 अर्घ्यपाशमंडलप्रणिमापूजा — ६
 बलिविधि — ७
 माथानीभिव्यलस्य — ८
 गुग्गुलुमूलद्वयविमर्जन — ९
 दावना — १०
 शिख्याधिवासन — ११
 पंचगव्यविधि — १२
 लोकेश्वरमंडलसंस्कारपूजा — १३
 स्वानवायुसंस्कारपूजा — १४
 ब्रह्मधर्मसंस्कारपूजा — १५
 वायुपूजा — १६
 शकन — १७
 विसर्जन — १८
 ब्रह्मकाशिकर्क — १९
 विष्णुपूजा — २०
 किरणभोग्याभिविधि — २१

॥ दिजा ॥
॥ ७९ ॥

॥ ४ ॥

पुनः प्रजा — २०
क्षिप्य विपालीयार्ककाय — २१
धनीलि असक्त न स इहाधीन — २२
लिचास्ये गुन्मसु लक्ष्म — २३
पंचगव्यसिद्धय — २४
पाशप्रजा — २५
पंचसालिप्रजा — २६
द्ववप्रतिपादप्रजा — २७
अंगनसा धन — २८
आदिसम ध — २९
नालप्रजा — ३०
मैठुल्यवि ध — ३१
नालकाय — ३२
माशायप्रवण — ३३
नन्दिनमस्त्वान — ३४
विमर्जन — ३५
मैपुहचक्रसमाधिप्रिसमा — ३६
वि — ३७
कलभसामकिआदिप्रजा — ३८
उपाध्वानेकिनक्षप्रजा — ३९

॥ पुनः ॥
॥ ७९ ॥

किं न दत्तायि द व पृजा — ३६
 मं तुल पृजा किं न पृजा — ४०
 अम न व लि पृजा — ४१
 पीठादि पृजा — ४२
 पं चाप चान पृजा — ४३
 म गा डा — ४४
 गु न्ना उरु नी न तु प्र लि प्र प स
 न व स्तु ति य — ४५
 गु न्ना उपा अ मा ज्ञा स प्र पि ना व
 य अ स्ति प्र गया आ ह्य
 म स चो न — ४६
 गु न्ना तुल व लि वि य तु
 य क दान म तुल द न का रु द्या
 उ का रु कि कृ ष रो प्र जा — ४७
 शि ष्य क र्थ य सा — ४८
 गु न्ना तुल दे क — ४९
 ख क ने — ५०
 म तुल वि स र्ज न — ५१
 न द्या स्वी कृ क र्ण व ना — ५२
 ख क ने — ५३

॥ ६ ॥ दिजा ॥

शोधना — ५५
 पाद्यादिनिर्लाभन — ५६
 सैखलेखराय — ५७
 श्रिकायसधनननिकसीकृकं ५८
 द्याशनमगकं न — ५९
 माशानेमिरापािकाग कडगथन ६०
 दन्कका सुअर्पिन्वाक — ६१
 वृगका दज्जामीडलसगानक ६२
 कलभलेख — ६३
 द्याउकोडु — ६४
 काइकिदास्य — ६५
 नालाहागसक्राक — ६६
 धथथामेगय — ६७
 रकने — ६८
 कृष्णविष — ६९
 मलकने — ७०
 सिद्धेस्य — ७१
 शिष्यपिथनकाय — ७२
 अर्थननसइहाशन — ७३

॥ ७ ॥

मछुलथिते — ७७
 किरन — ७८
 सभाजन — ७९
 वेनपुआ — ८०
 दगुसमथवाकनहिथ ^{का} — ८१
 समयमधचक्रधर्मागनीमध — ८२
 चक्रमन्वाले — ८३

इविथसुन

जापीक्य ध सुनयागुअष्टमि
 वरुयामी डलविसर्जने — १
 सुमिचुयककाय — २
 शीकाडीने — ३
 अख्येननस आदिभूतसायठ
 अख्येननस पादाघर्गुनमेछु
 लआदिपुआ — ४

॥ दिजा ॥

॥ ८॥

उपाध्वाने आगभा पूजा	६
आगीवाक्यायक स्तोत्र	७
आदिकाय	८
मधुलघिम	९
गालकाय	१०
माशाप्रवध	११
नदिनमस्मान	१२
सैवर्धनचक्रसमाधि	१३
कलभआ	दिपूजा-१४
दवपूजा	१५
मंडलपूजा	१६
पीठादिपूजा	१७
चक्रैश्वनीमाशानिष्क्रियापु	
ष्यसुदीति	१८
चक्रैश्वनीयागथागतचिद्विपू	१९
माशायामुष्यमूटिगिःसिद्धय	२०
कैःअतपकमरवकोखागप्रति	
विमर्कन	२१
वृषकन	२२

॥ दिजा ॥

मरुकेन	२३
स्वीमानामडलप्रदकिधादा	
रखने	२४
मात्राआर्वध	२५
मायासहितमधुलप्रदकिधादा	
मायाआर्वधलिकाय	२७
वृद्धकन	२८
मायाआर्वध	२९
पिदाशया	
गुन्मधुल	आधुमसचाने ३०
लिख्यपिन	विसर्जन ३१
देक	गुन्मधुल
विसर्जन	३२
फलधायालीखनस्येरीखलीखने	३३
हाथ	३४
रावना	३५
निर्माजनआहामिनका	३६
पंचगव्यविय	३७
नत्नमधुलदीहसप	३८

गुनपादाय	३५
प्रिकायाविष्टान	३०
भिष्यसिद्धकाय	३१
मूलनेरुके	३२
सिधोवस्तुविष	३३
नानधग्वावे	३४
ग्वावे जानके	३५
उठान	३६
गुनन्यने	३७
कलाभा	सुनमप्रथ ३८
एकने	३९
मिनभवदो	विषय — ४०
मदनभालिनके	४१
वदीनगलसविष	४२
षकने	४३
गमलिकापे	४४
मधुलप्रदजिध	४५
गुनन्यप्रविषहु	४६
नागमाजायाअवभभिष्ययाज	
मीनकाय	४७

खकने	५८
घट्टास्ये मालस वक्षथीय	५८
खकने	६०
नृगलस वक्षीथिय	६१
खकने	६२
कोपाननके	६३
खकने	६४
काषपानुघानके	६५
आषे भलावना	६६
दुहाडीना	नालका ६७
नृस्यनभा	६८
मरुकेनेप	चवेरुने ६९
मिष्यमलुलप्रदजिध	७०
पृथ्याकन	७१
अन्धपगनलिकाय	७२
मलुलयाखकने	७३
खानशफोयाखकने	७४
यथगुस्वानविय	७५
मिष्यपिके स्वक्तिनाम्ने भारीख	७६
निरुय	७६

गुनमधुलदैक विसर्जन	— ७७
अध्वपनाकावना	— ७८
कलभाहिरिक	— ७९
मकटाहिरिक	— ८०
सिक्काय	— ८१
पटाहिरिक	— ८२
हावेनाधिवलखकाय	— ८३
बडाहिरिक	— ८४
घट्टाहिरिक	— ८५
नामाहिरिक	— ८६
जिसमय	आर्त्तिगण ८७
घट्टासम	य — ८८
मलुदान	— ८९
अङ्गनाहिरिक	— ९०
दर्शनाहिरिक	— ९१
भनकेव	— ९२
विवापिगकाय	— ९३
पाङ्गकीग्रन्मधुल	— ९४
अध्वपन	— ९५

गङ्गाहिरिक गीत सहजस

गीत ९६

प्रह्लादज्ञानातिरिक्त — ८७
 गुनीभिष्यस्तु प्रह्लादज्ञानाय ८८
 अन्धपगननिकाय — ८९
 मधुलविसर्जन — १००
 विषाडकाय — १०१
 विद्यावृत्तं गुनीप्रह्लादज्ञानाभि
 ननापलाकावद्वीथि — १०२
 सिरुलयेसाकृत्थ — १०३
 वज्रवृत्तं वद्वीथि — १०४
 महेशान्न. गीतवासाद — १०५
 हि — १०५
 नय्यावृत्तना मन्त्राप्रज्ञा — १०६
 गीतज्ञानरुचि — १०६
 मन्त्राधिकं गीतधनधन — १०७
 रुक्मवृत्तं — १०८
 शिखिपिसकसिनीस्वामाजीना
 खत्वीगजीनाग्रपक्षमायाना
 खत्वीगभिनेदिकास्वामाकी
 खाय —
 गुम्फनीधूपधस्येआवे ४ — १०९
 पंचोपचोनप्रज्ञा अख्यमनसदिग्वलि ११०

॥ दि जा ॥
७८॥

॥ १४ ॥

मात्राश्रावण — १११
क्षिप्यपनिष्ठनक गाँक — ११२
मलनृभ्य चक्रो कृच्छ्र — ११३
सद्यप्रजागीग कङ्गानसकनज ११४
खाजकृपालहियगी नत्रिहदा ११५
समाजन आवधदिके — ११६
मद्राकोगेगीग सादधहाय ११७
मद्राप्रजायाक दङ्गदध स्तुति ११८
खालवलि
रथभगत
मलनको
गोदेपाङ्गचिनाह दयदिकाज
गोअरयस्मैव्याकधु माय १२१
क्षिप्यपिग स्किरलिकापिछु
पाङ्ग कवायवस्तुविष सैखवि
य प्रस्तक विष घछ विष स्वक
न — १२२
रावनाखकने — १२३
कृष्णकृष्ण लेख सैकिं — १२४
गुननृभ्यगीग सुप्रदिमदिग १२५

॥ ७८ ॥
॥ १४ ॥

किं डीने स क समने कि ग न स्त
 गा आ शु म से व द ना या ना छ व
 कटि के गु नै छ तै ल डी का बा छ
 य गु न न म स्का न या य — १२६
 थ थ आ से ग य र व क न — १२७
 भि ख्य पि मि उ न स्वे म छु ल
 प्र द डि ए गी न नी डी डु व — १२८
 गु न् आ शु म स चो न — १२९
 सि ख्य क र्थ र्थ त य सि र्द स य १३०
 र व क न द ह प ड न य १३१
 द डि ए म या र व क न — १३२
 भ र्थ य न स इ हा डी न १३३
 म छु ल थि से कि न न स्तु कि चि
 रू व डी ग को द डि ए — १३४
 द गु स म य आ लि ग ह ध भि
 व्य पि छो य वा हि क स्मी गु न् छो
 य स म या च क वि स र्द ध — १३५
 म छु ल गे क ल ह भ य म ड — १३६

॥ दिङ्गा ॥
॥ ७७ ॥
॥ ५० ॥

सहान गीत धामिलदाय - १३०
कल्यानगुन किनेय विखाऊ
दजान के छिष्यसय गीत कोठ
अवैध महुलप्रद किधायय १३८
आसनाय — १३८
विहा डीय गुन आधमसचान १४०
छिष्यसगुध दधपग्र गधचक्र
गीत राखन वलिक्यय कलछ
य — १४१

४४

五世

इविप्रदक्षिण

मांसाहु किं जीनी प्रहर्ष कलश
 नम्य स्थपना
 लिवास्मी गुन्म ह्यल पंचगाय
 सिद्ध गय पंचा कृष्ण प्रजा-२
 वसि पाद प्रजा कजल साधन
 अदि यारु धरु म ह्यल विरे

॥ गुरु ॥
॥ ७७ ॥

ताललाये नमस्कान — ३
 नागमालागीत विष्वसनीन
 ह. आदि मांसाहृति शालीमा
 को प्रजा —
 नृहर्षसालिग्रहक — ५
 क्रमानि प्रजा विव्याधिवामन ह
 मछुलधिले नृहर्ष सगाड
 न. क्रमायन विसर्जन सधन
 य. चिरुप्रजा दकि धा दिगुस
 मधेखास्मे
 प्रजायाय
 मयाचैक
 क्रमानि
 वाहिस
 (अभाह)

विसर्जन. अहं (अथ मडसे
 दान कलधलकाय नृहर्ष
 कृण विकलधयादधानपद्र
 रा श्रिनदिका जोनक — ६
 गधचैकगीत राधन — ८
 ४४ मिड विप्रहर्ष

॥ दि. ३॥

॥ १८ ॥

स गि सु न रु च रु थि - १

॥ सीक्षा इविय पुन ॥

निर्मान कल ॥ भाला कल ॥
सिद्धा प अ रि धि क वि मा को
स्थपना या थ लि चा स्म ग न
म धु ल प च ग व न ह स्म म
धु ल प्र जा ष ड् या गि नी प्र जा
क स पा ड ग य ॥ ४ ॥ म ॥
न व लि नं दा व लि प्र जा
म धु ल मी क स्म सि द्ध ग
य प्र मि पा द प्र जा क क न सा ध
न आ गी री प्र जा आ दि क्ता स्म
आ ग री री क्ता य क क्ता थ प
आ दि अ ह य ग म धु ल थि ले
लं र व लि क्ता थ ॥ ४ ॥ ना य प्र जा २
व द्वा वा ना हि द ग या थ ३
क ल ॥ प्र जा म धु ल प्र जा दे व

॥ १८ ॥

पूजा म छुल पूजा चाक पूजा ४

छुम स माधि सह की जन कने

क ऊय म डा पूजा — ५

म डी गिय घ छ थ सी म छुल

व द कि छ म् स्था न माली डा म्

ठान ख ने स्था न थ मे कू य — ६

धू जा ना हाने घ छ थ सी म छु

ल प्र द कि छ म् स्व चा प प न क ने

म र के न

काल ला य

मू छू छू

॥ — ७

क म निका

प न मा डा आ

व ध

थ क सी पूजा रु की न के पि हा व

न ग म कू धो वि य न म स्का न ना

ग माला वी ध स मो नू ह छ म क

गी ग ह न मिल रु म निका वि

स र्जन गु न पा दा य — ८

आ क नू रू य गु न नू रू य जी रु य

म हि म छु ल आ क प्र मो दि ने

॥ दि आ ॥
७८ ॥

॥ २० ॥

ध्मक शिष्यकथर्थं गथं गुनम
छुल मग पुजा विसर्जन राव
ना लोहाग्नीनजा पंचगव्यं न
नेम छुल दीहलप रावना प
चगन्धनाद्रिकायाधिष्ठानं पुग
नीबुलने गाननगथ सिद्धच्छ
य शिनेवल्लुगथ पात्रम उवच
ग्नलनस्मै विथ अधपननगथ १०
उधनया स्मै चाउयके
गच्छगस्मै दभयनं गु
नीननेक स्वेष्टा सम
यदान लोसुयके माउस रवद
नीथिय गच्छुलिकाय — ११
माज्ञानीसाला डोपल दधुसगथ
पश्च प्रधाम कोषपाननके ख
कन कोषपान धोनके खकने
शिष्यथिथिमथियके गथ
आवेश स्वागथ आगवीकाना

७८ ॥
७९ ॥

कीकयागु इ हा डीना लक्षाथ
 गीगनभाह
 मरुकेने अर्ये गनसइ गयने
 पुष्यपागन महुल याखकने
 स्वानइ कीयाखकने थडीशु
 स्वानविद्य पनिक्रम पलेचीया
 आसीखनीलासी गय मंदल
 रुचाचीया सीछा होवायके
 अख्खवना

महुलवि सर्जनराव
 ना लोहागि नडाखव
 ना धमलोक लेखारिष
 क उदकाठिषक सिद्धकाय
 कैजल पुष्य मूर्धागिके

थापिग्व उ महुपागाधूपदह
 कथमा पप्रराइन उमन्नय
 गकिगस्येस्थापनाकल्यानगु
 थाकालियायपूजासैकल्पया
 स्मी गुनमहुल सिद्ध गय आ
 दिप्रज्ञा प्रदिपादप्रज्ञा कइनसा

॥ २२ ॥
॥ दि जा ॥
॥ न ॥

धन आदिकाय महुल थिलकि
 नने वडावानाहि दि गुयाके—
 जाप जागस मलु दानवी स एम
 न मग थापि पूजा देव पूजा गीत
 निर्मानादि चाक्र पूजा महुल थि
 लकि नने सगी माहनी क्वाय गुन
 प्रमुरवे च गपूजा देगु सम य भि
 व्य आ वेष सद्य पूजा गीत दीरु
 क आ कूल हि गीत छिदं डा भि
 व्य आव
 पात्र स
 थिय के घट्ट स म य वि रुद्रा मा
 या स्व कने धनी लि पात्र स ग या हा
 अनू विसर्जन स मा ऊन ऊ मा प
 न वलि था य गुन नै रव दा र्ज भि
 न स थिय पूष्य म्दा गीत स्वा मा
 वलि न य
 पी च धना हा य के पी र्ज ४ म रु क
 गीत म ड ख क न स ला रु कि य रु

५ अना ना या स्व
 कने ६

॥ २३ ॥
॥ दि जा ॥
॥ न ॥

कथञ्चप्यपलपि गुत्तमछुल
 आदिसमय मछुलथिलसमा
 धि कलसादि पृजा अमिस्काप
 न मासकि पृजा देव पृजा आ
 हकि वेस्वानन पृजा आगिनी
 गाल्लाये

मीसाहु किर्पचधाना गी गका
 लाङ वेस्वानन इयं पीच भाली
 लहिय पल नृय गी ग हाजा
 रुनद्य द अपशुक
 मानिपृजा शिष्याधि

वासन
 शिष्याहु कि सिद्धै लय मछुल
 थिले लु कि ग्वा ज्वये इ द्युग
 पृद्धो होमन जा आशिर्बोद
 स एमन चिरु पृजा दज्जि धाद
 गुसमय क्कास्ये कुमानी पृजा रु
 य मछुल स शल
 द गुसमय कुमानी प्रसाद मोह

॥ २४ ॥
॥ ८९ ॥
॥ दि जा ॥

नी वाहि गीत च कि कुछुल सम
या चक्र मय प्रक्ष्व विसर्जन मे
दान जी गिनी पनी गु स्वी मनुक
क्षीम व निग य ग छु ग स्वी मात्रा
प्रवक्ष धमून कि नी वय प्रोजेन के गु
नक्षय गीत द्वि विनी च ले प कि
दीग स्वया इहा डी न नाग भ्मक
आधुम स चाने स गा जन म डा की
के गीत सीदक्ष मात्रा या गु स्वन
को काय दलि न खा य कल क्यार्थ
गुन समय भिष्य पिस
गुन याग सगु ध वि
दक्ष पत्र ग ध च क्र गीत रास्व
न

वशा चार्थ्ये ३

भुभर सम्वत् १० ५२ साल मा
न कुषात्रयो दसि बुधवार शु
नृत छे वाहा लया लुध दर्शन ह
र्ष या गु दिक्षा विधान स फुस
प्ररो या ना दिन जूलो शुभम् ०

राजा लाल ना किं न माता म नैत ह त म ह म इल प व सा ल भा त पु गो सि ह त व द्ये
म न ल लुता मो र गि स त त व्या के विन त न भा रि का य म मा दि पा व क्ता त रा ध
म त ठा रि क्ता को म क ल पु गो गी त द्ये व का री की ना डि पि ठ पु गो दि गा कि को
दिशा त म स त क्ता के ने क्ता ता म के क म त म दि म के म र ध र ह दि व र्ता व क्ता कि म

॥ ५९ ॥
॥ ५९ ॥

उद्यानामलचक्रा॥ हसिष्यपि धूमपनमध्वनवज्जवानाहीश
गधिंल्लाधसांनालिचक्रंथहाशया नीर्माधचक्रंविद्यानाचांस्त्र
अनीलधुना॥ वायुयावर्गथाहा विद्यानाचांस्त्र॥ विद्युक्कना
राधना॥ पल्लवासाकुयुगुर्न जगत्थचांशयासकीगुप
माधीवज्जशयाजाश्लमान शयावीद्यानाचांस्त्र॥ दग्ध
विशिरुया॥ स्वर्गमध्वपागालदग्धमानशयकाचांस्त्र॥ त्रिलोकमही
गा स्वर्गमध्वपागालया मोक्षयेकाचांस्त्र॥ पीयूषधनाल्लगास्वर्ग

मधपागाल भूमि न धना हाय का चोत्ति ॥ बुद्ध हानन सा बुद्ध पिनी गुरु
नन सग या चोत्ति ॥ वीला वीष लूया दक्ष पाप रूका वीजाना चोत्ति ॥ स्वाने
दसं दोहना थ थ थ मने आन दश या चोत्ति ॥ रावो राव वी
चान धम विव हि गा राव अरु राव शनी गु वी चा या ना चोत्ति ॥ वा
माहि को पा रुव ॥ थ थिं गा अ व ड वा ना हि मि सक सि ने न आ ज पा थ ॥ नी
मा ना वि दि न स मे उ ल ग गा ॥ ह क्षि थ पिं हा ने थ प न म ध न व ड वा ना
हि श यू ग थो अ ला ध सा ना ही च कं थ हा थ या नी मा ध च कं वी श ना

सूर्यमधुलया उ न विद्याना चीं ॥ कात्यादिव ॥ अकाना
दि ककाना दि आखलं चाउला चीं ॥ प्रज्ञाता कलन कला मि
थं कायका न ॥ मी पिकया विद्या ना चीं ॥ अमृतसवा ॥ वा
धिचिं नामृग कल ॥ यागु अमृ गस्त्रानयाना चीं ॥ सुक्ष
माकुसुं शो पमा ॥ पयम ॥ नवदंवा नाही गथ्व चीं ॥
धामा टधी कलं स्वर्गम ॥ पागा लका सा ची धी कलं पल ॥ याउ
त्वाज्ञाय वल सुका गयी च विथ्व ची कि धी कश्या ची ॥ विद्या बुद्ध कदम्ब

क॥बृद्धपिनीगुवीशायारानीश्याची॥दहमिरुया॥स्वर्गमल्लप
गात्रवयागुनस्मीपीकयादग्धमानशयकाची॥चक्रुयाठदनी
॥कायचक्रवाकचक्रचीरुचक्र
ललिताधका॥थथथमनेआ
रूनगवी॥प्रकाशमानश्याची॥वानाहिकीचमसि॥थथिजाप्रवज
वानाहिरवधकाकिमिसंसियीकी॥॥चछुअलि॥नारिचक्रंथह
डायानीमाधचक्रयादेवनधमदियाविद्यानाची॥कनलिनया॥डा

सालया कीर्ति स्वर्गमध्य पागाल से जा जो लयमान रूप का ची॥ निरु
पदा॥ गा छुव पठु कया वी शाना ची॥ इला लिगा॥ थन इ अन इ ध का सु
नी नै था कयी काय मरु या ची
फ मान रूप या ची॥ विठ्ठ रु नी॥ विठ्ठ रु॥ थ सी सा न व्या
ची॥ महा सुख॥ सकल सत्त्व प्रा धर्मा दिया था हा वि शाना
वि शाना ची॥ वी न चर्य॥ धूल निस्पि इ उ बल निस्पि इ ध का सु ना नै था क
यी था का य मरु॥ नी ल॥ थ सी सा न रु कि सी नी ल मरु धर्म सी नी ल म

शु.पापसंनीलमशु॥स्वर्वाशुदया॥थथथमनसिकाकार्यमागुश्रान
उभयानाविश्रानाची॥अम्बाजाग्रगगापि॥च्याहइगुलाहिगारुद
लकमलधयागुपलस्वीयादेव नविश्रानाची॥नीर्वि
पदप्राना॥धर्मसामेसकल याननिर्माद्यपदवीयावि
श्रानाची॥विधर्मजया॥थस्यालवज्जवानाहियागजे॥नागभडाग
॥नागयाकेनागवज्जशुपुगु॥च्युग॥थदीगुलिंरूकाविश्रानाची
॥अद्वय॥निष्क्रमइरूकश्रयाविश्रानाची॥गथनिष्क्रमइ

आ३

कृष्णशयाविद्यानार्चाप्रलाभमा ॥ श्रीहरकधर्माधरपनमध्वनव
जवानाही वजवानाहिधर्माधरपनमध्वन ॥ वजवानाहिशयावि
द्यानार्चा ॥ सहर्नदाय ॥ सह
नार्चा ॥ वन्दामह ॥ धर्माधर
कसिर्ननमस्कान ॥ ॐ ॥

ज्ञानन्दस्वरूपशयाविद्या
प्रवजवानाहियागमीस
॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥



अनेनापुष्पतवं हि स्तुतवहिप्रतापसाधवता हि जीनस्तु पुष्पास्वामिक प्ररु॥ यन्नृत्त
अनस्तु पुष्पावाजिपतापति ॥ वल्लसक मह अन विष्वायु महावल ॥ कामदेव हविचेव चन्द्र
सूर्या तथाग्रहा ॥ पृथ्वीपालार्धधी ॥ अथैव कूटनकुंनस्तथा ॥ धर्मजाता अच नागा अच गन्धर्वास्तुन कि
न्तना ॥ प्रयति ॥ स्थिता दवा अकति स्तुतिवासीन ॥ महानाता स्तिताय च पत्नी माता व अच वरुन ॥
नीर्माद्य चति दवा अच शुद्धावासा अच यस्तीता ॥ मालिनी लोकधातु सहा धातु निवासिक ॥
चतुर्दिपि स्तिता सत्वा स्तिताय च श्रीधातुके एतान सत्त्वलोका अच लता गुल्म रूतादय ॥ मू
दिता हूमि स्तिताय च विमलाया मूपागत ॥ अक्षी अतिनि ॥ अच चलाया कृपावद ॥ धर्मम
घातूपाय च सुदुर्जया गता अचय ॥ दुर्गमा निवासा च प्रहाकनी निवासिन ॥ अहिमुखि स्ति
ताय च साधु मति निवासि ॥ २२ म हूमि अच नाथ आर्या साग महा पून ॥ यिता हाम विधात नञ्
सर्व गृहर्म ॥ २३ त ॥ स्वामिवाः

24. 1. 1862

[illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

118/1. ۱۵۷۲

Handwritten text in Devanagari script, likely a continuation of the previous page's content.

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

[illegible]

1818-1819-1820-1821-1822-1823-1824-1825-1826-1827-1828-1829-1830-1831-1832-1833-1834-1835-1836-1837-1838-1839-1840-1841-1842-1843-1844-1845-1846-1847-1848-1849-1850-1851-1852-1853-1854-1855-1856-1857-1858-1859-1860-1861-1862-1863-1864-1865-1866-1867-1868-1869-1870-1871-1872-1873-1874-1875-1876-1877-1878-1879-1880-1881-1882-1883-1884-1885-1886-1887-1888-1889-1890-1891-1892-1893-1894-1895-1896-1897-1898-1899-1900-1901-1902-1903-1904-1905-1906-1907-1908-1909-1910-1911-1912-1913-1914-1915-1916-1917-1918-1919-1920-1921-1922-1923-1924-1925-1926-1927-1928-1929-1930-1931-1932-1933-1934-1935-1936-1937-1938-1939-1940-1941-1942-1943-1944-1945-1946-1947-1948-1949-1950-1951-1952-1953-1954-1955-1956-1957-1958-1959-1960-1961-1962-1963-1964-1965-1966-1967-1968-1969-1970-1971-1972-1973-1974-1975-1976-1977-1978-1979-1980-1981-1982-1983-1984-1985-1986-1987-1988-1989-1990-1991-1992-1993-1994-1995-1996-1997-1998-1999-2000-2001-2002-2003-2004-2005-2006-2007-2008-2009-2010-2011-2012-2013-2014-2015-2016-2017-2018-2019-2020-2021-2022-2023-2024-2025-2026-2027-2028-2029-2030-2031-2032-2033-2034-2035-2036-2037-2038-2039-2040-2041-2042-2043-2044-2045-2046-2047-2048-2049-2050-2051-2052-2053-2054-2055-2056-2057-2058-2059-2060-2061-2062-2063-2064-2065-2066-2067-2068-2069-2070-2071-2072-2073-2074-2075-2076-2077-2078-2079-2080-2081-2082-2083-2084-2085-2086-2087-2088-2089-2090-2091-2092-2093-2094-2095-2096-2097-2098-2099-2100-2101-2102-2103-2104-2105-2106-2107-2108-2109-2110-2111-2112-2113-2114-2115-2116-2117-2118-2119-2120-2121-2122-2123-2124-2125-2126-2127-2128-2129-2130-2131-2132-2133-2134-2135-2136-2137-2138-2139-2140-2141-2142-2143-2144-2145-2146-2147-2148-2149-2150-2151-2152-2153-2154-2155-2156-2157-2158-2159-2160-2161-2162-2163-2164-2165-2166-2167-2168-2169-2170-2171-2172-2173-2174-2175-2176-2177-2178-2179-2180-2181-2182-2183-2184-2185-2186-2187-2188-2189-2190-2191-2192-2193-2194-2195-2196-2197-2198-2199-2200-2201-2202-2203-2204-2205-2206-2207-2208-2209-2210-2211-2212-2213-2214-2215-2216-2217-2218-2219-2220-2221-2222-2223-2224-2225-2226-2227-2228-2229-2230-2231-2232-2233-2234-2235-2236-2237-2238-2239-2240-2241-2242-2243-2244-2245-2246-2247-2248-2249-2250-2251-2252-2253-2254-2255-2256-2257-2258-2259-2260-2261-2262-2263-2264-2265-2266-2267-2268-2269-2270-2271-2272-2273-2274-2275-2276-2277-2278-2279-2280-2281-2282-2283-2284-2285-2286-2287-2288-2289-2290-2291-2292-2293-2294-2295-2296-2297-2298-2299-2300-2301-2302-2303-2304-2305-2306-2307-2308-2309-2310-2311-2312-2313-2314-2315-2316-2317-2318-2319-2320-2321-2322-2323-2324-2325-2326-2327-2328-2329-2330-2331-2332-2333-2334-2335-2336-2337-2338-2339-2340-2341-2342-2343-2344-2345-2346-2347-2348-2349-2350-2351-2352-2353-2354-2355-2356-2357-2358-2359-2360-2361-2362-2363-2364-2365-2366-2367-2368-2369-2370-2371-2372-2373-2374-2375-2376-2377-2378-2379-2380-2381-2382-2383-2384-2385-2386-2387-2388-2389-2390-2391-2392-2393-2394-2395-2396-2397-2398-2399-2400-2401-2402-2403-2404-2405-2406-2407-2408-2409-2410-2411-2412-2413-2414-2415-2416-2417-2418-2419-2420-2421-2422-2423-2424-2425-2426-2427-2428-2429-2430-2431-2432-2433-2434-2435-2436-2437-2438-2439-2440-2441-2442-2443-2444-2445-2446-2447-2448-2449-2450-2451-2452-2453-2454-2455-2456-2457-2458-2459-2460-2461-2462-2463-2464-2465-2466-2467-2468-2469-2470-2471-2472-2473-2474-2475-2476-2477-2478-2479-2480-2481-2482-2483-2484-2485-2486-2487-2488-2489-2490-2491-2492-2493-2494-2495-2496-2497-2498-2499-2500-2501-2502-2503-2504-2505-2506-2507-2508-2509-2510-2511-2512-2513-2514-2515-2516-2517-2518-2519-2520-2521-2522-2523-2524-2525-2526-2527-2528-2529-2530-2531-2532-2533-2534-2535-2536-2537-2538-2539-2540-2541-2542-2543-2544-2545-2546-2547-2548-2549-2550-2551-2552-2553-2554-2555-2556-2557-2558-2559-2560-2561-2562-2563-2564-2565-2566-2567-2568-2569-2570-2571-2572-2573-2574-2575-2576-2577-2578-2579-2580-2581-2582-2583-2584-2585-2586-2587-2588-2589-2590-2591-2592-2593-2594-2595-2596-2597-2598-2599-2600-2601-2602-2603-2604-2605-2606-2607-2608-2609-2610-2611-2612-2613-2614-2615-2616-2617-2618-2619-2620-2621-2622-2623-2624-2625-2626-2627-2628-2629-2630-2631-2632-2633-2634-2635-2636

अथ भरुकाथि

321